।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 12 अंक : 140 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जनवरी– 2020 30/–प्रति

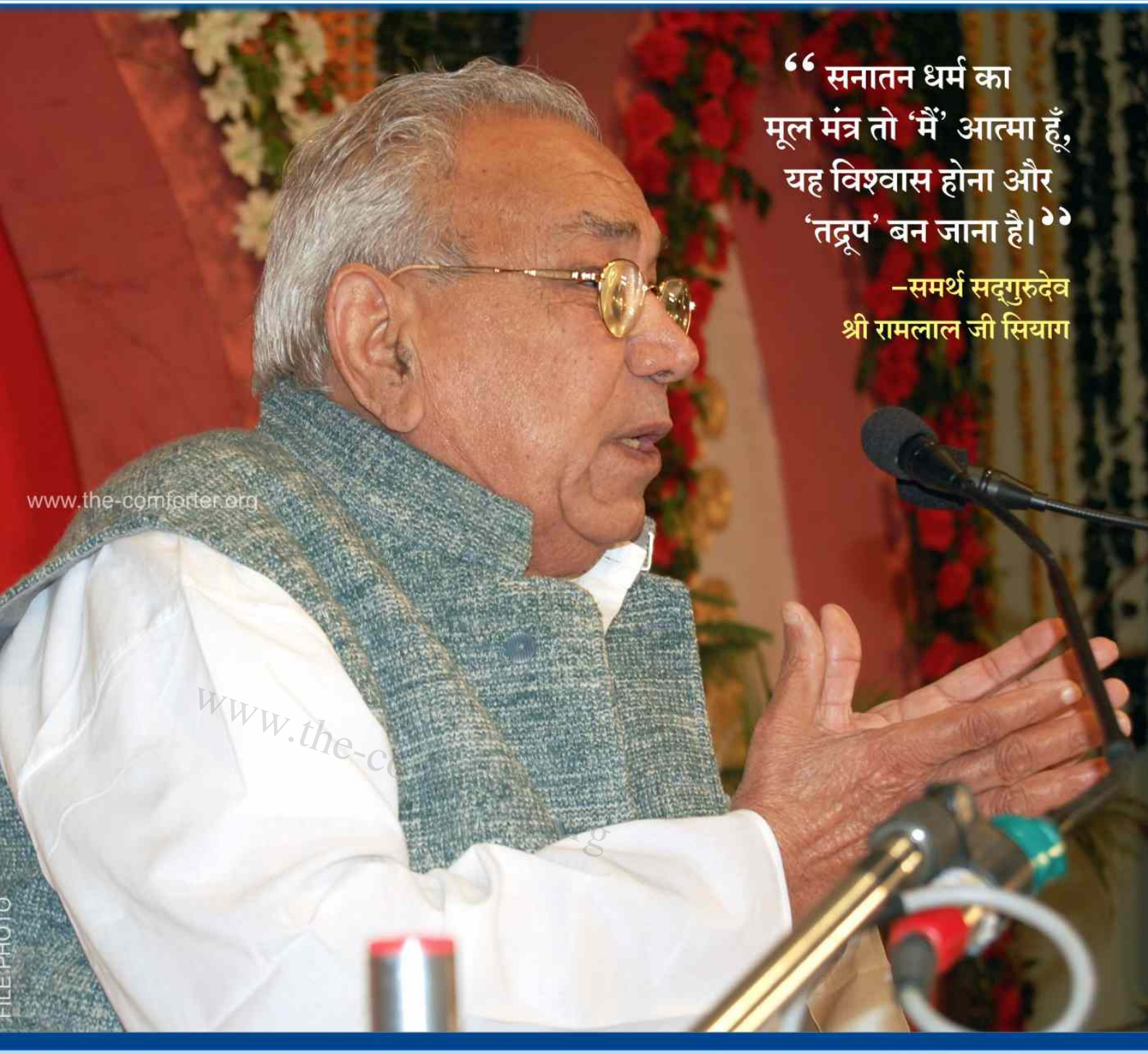

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर में बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) के बरसी पर्व पर पूजा-अर्चना कर 15 मिनट ध्यान किया गया। (22 दिसम्बर 2019)

www.the-comforter.org

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस
Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 12 अंक : 140 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जनवरी – 2020

वार्षिक 300/– ❄ द्विवार्षिक : 600/– ❄ आजीवन (11 वर्ष) : 3000/– ❄ मूल्य 30/–

❖
संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग

❖
सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 001
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

सत्येन निष्ठते जगत्.....4
भागवत चेतना के अवतरण से जीवन का दिव्य रूपान्तरण (सम्पादकीय)...5
सर्वधर्म समभाव मंत्रालय.....6
सत्य का संहारक युग.....7–11
गुरुदेव सियाग सिद्धयोग (अनुभूतियाँ).....12–18
चित्र पृष्ठ.....19–22
अनुभूतियाँ.....23–24
एक जुट होकर.....25
योग के आधार.....26
भारतीय योगदर्शन का मूल उद्देश्य मोक्ष है.....27
योगियों की आत्मकथा.....28
भारत की स्थिति.....29
योग के बारे में.....30
समाचारों की सुर्खियों में.....31–32
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....33
Beginning of my Spiritual Life.....34
सिद्धयोग.....35–36
शेष पृष्ठ सम्पादकीय.....37
ध्यान विधि.....38

www.the-comforter.org

सत्येन निष्ठते जगत्

सत्य वह चट्टान है जिसके ऊपर विश्व निर्मित है। 'सत्येन निष्ठते जगत्। **मिथ्यात्व** कभी भी **शक्ति** का वास्तविक **स्रोत नहीं** बन सकता। जब आंदोलन के मूल में मिथ्यात्व होता है तो उसका **असफल** होना निश्चित है।

कूटनीति तभी किसी आंदोलन की सहायता कर सकती है, जब वह आंदोलन **'सत्य'** पर चले। कूटनीति को मूल सिद्धांत बनाना अस्तित्व के नियमों का उल्लंघन करना होगा।

www.the-comforter.org

-महर्षि श्री अरविन्द

'भारत का पुनर्जन्म' पुस्तक पृष्ठ-37 पर

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

भागवत चेतना के अवतरण से जीवन का दिव्य रूपान्तरण

सन् 2019 पूरी दुनिया के लिए यादगार वर्ष रहेगा क्योंकि 24 नवम्बर 2019 को सतयुग की शुरूआत हुई है। सन् 2020 देश और दुनिया के लिए कुछ नया रूप लेकर आएगा, जो प्रकृति में पूर्व निश्चित व्यवस्था है। सत्य की विजय होगी। हमें सत्य में काम करना है और सत्य में ही जीना है। समस्त मानव जाति को नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

''अतिमानसिक शक्ति के अवतरण का उद्देश्य ही है जीवन का दिव्य रूपान्तरण। **भगवान् का मिशन ही है धरती पर के जीवन को स्वर्ग जैसा सुन्दर बनाना।** मानवीय चेतना की तैयारी में भागवत प्रेम धीरे-धीरे क्रम से धरती की चेतना में उतरता है और चूँकि मानव चेतना में विभिन्न परतें हैं-ग्रहणशील, कम ग्रहणशील और अग्रहणशील, तामसिक और कठोर इसलिये अवतरण करने वाली शक्ति और प्रेम भी ग्रहणशीलता के अनुपात में, कम ऊँचाई, अधिक ऊँचाई और सर्वोच्च शिखर अर्थात् अतिमानस से उतरते हैं।

''अतिमानसिक शक्ति के अवतरण का उद्देश्य ही है जीवन का **दिव्य रूपान्तरण**। भगवान् का मिशन ही है धरती पर के जीवन को स्वर्ग जैसा सुन्दर बनाना। मानवीय चेतना की तैयारी में भागवत प्रेम धीरे-धीरे क्रम से धरती की चेतना में उतरता है और चूँकि मानव चेतना में विभिन्न परतें हैं-ग्रहणशील, कम ग्रहणशील और अग्रहणशील, तामसिक और कठोर इसलिये अवतरण करने वाली शक्ति और प्रेम भी ग्रहणशीलता के अनुपात में, कम ऊँचाई, अधिक ऊँचाई और सर्वोच्च शिखर अर्थात् अतिमानस से उतरते हैं।

मोटे तौर पर हमारी सत्ता में आत्मा, मन, प्राण और शरीर की विभिन्न चेतनाएँ हैं। इनमें अकेले शरीर में ही अवचेतन से **द्रव्य (Matter)** के निश्चेतन तक कितनी ही परतें विद्यमान हैं। इस घोर निश्चेतन अर्थात् तमोगुणी जड़ता की पेंदी में सुप्रामेण्टल अर्थात् अतिमानस का जमा हुआ शुद्ध द्रव्य मौजूद है। जहाँ से सारी सृष्टि उत्पन्न और विकसित होती हैं। जीवन की अदिव्यता का कारण है हमारे भीतर विभिन्न चेतनाओं के रूप में बुरे संस्कारों और विकारों की परत दर परत जमावट।

जीवन के सभी स्तरों में किसी न किसी प्रकार की विकृति मौजूद है। मन में अनेक झूठी मान्यताएँ, आदतें, अहंमान्यताएँ, प्रदर्शन और पाखण्ड की प्रवृत्तियाँ, प्राण में अंधविश्वास, कट्टरताएँ, जातीय व सांप्रदायिक रूढियों, आवेश, संवेग, ईर्ष्या, क्रोध, वासनायें, शरीर में खान-पान, रहन-सहन, भोग, रूप, रस, गंध, स्पर्श जैसी भूखें मौजूद होती हैं।

सबसे नीचे अन्धकार, अज्ञान मित्थ्यात्व और मृत्यु जैसी दानवी शक्तियाँ अपना डेरा डाले हुये हैं। मन के ऊपर आध्यात्मिक लोक, देव लोक, **अतिमानस** व **सच्चिदानन्द** के **दिव्य लोक** हैं। इन सबके प्रभावों के घालमेल का नाम ही है **मानव जीवन।**

''हमारी रीढ़-चेतना के दो विरोधी धुर्वों-दिव्यता और अदिव्यता को जोड़ती है।'' अदिव्यता की इस अटूट शृंखला के प्रभावों के कारण जीवन इतना संत्रस्त है। इन्हें दूर करने के सारे **धार्मिक, आध्यात्मिक और नैतिक साधन** अभी तक असफल ही सिद्ध हुये हैं।

श्री अरविन्द और श्री माँ ने अपने चेतनात्मक अनुसंधान द्वारा यह पता लगाया कि चेतना के उच्चतम शिखर अतिमानस की चेतना को यदि किसी प्रकार नीचे की अदिव्य चेतना के स्तरों पर उतार लिया जाय और वहाँ उसे ठहरा दिया जाय तो जीवन दिव्य हो जाएगा और धरती स्वर्ग बन जायगी और यदि कहीं ऊपर के **अतिमानस** को निश्चेतना में दबे नीचे के अतिमानस से जोड़ दिया जाय तो एक देवोपम सृष्टि का निर्माण हो जायेगा।

इस अनुसंधान को उन्होंने योग द्वारा कार्यरूप में परिणित करने का अंत तक प्रयास किया और अतिमानस

शेष पृष्ठ 36 व 37 पर ...

www.the-comforter.org

''सर्वधर्म समभाव'' मंत्रालय

भारत सरकार को **''सर्वधर्म समभाव''** मंत्रालय अलग खोल कर भारतीय दर्शन की सम्पूर्ण जानकारी देने हेतु सरकार साधन उपलब्ध करावें। सरकार में इस मंत्रालय का एक सम्मानित स्तर होना चाहिए। इस प्रकार भारत की भूमि पर मानवता में वह **दिव्य प्रकाश** अवतरित हो चुका है, जिसका वर्णन गायत्री मंत्र में दिया गया है।

यह मंत्र वेदों का सर्वोत्तम मंत्र है, इसे वेदमाता कहा जाता है। मात्र इसी से ही विश्व शांति संभव है।

www.the-comforter.org

पश्चिम **''रामनीति''** की भाषा नहीं समझता, उसे केवल **''राजनीति''** की भाषा ही समझ में आती है। अतः इस मंत्रालय को उसी भाषा में, उन्हें **रामनीति** का रहस्य समझाना पड़ेगा, जिसे पश्चिमी संस्कृति समझती है।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग, 4 मई 2003, मुम्बई

सर्दी की नवरात्रि से गुरुदेव ने गायत्री की आराधना शुरू की और 1 जनवरी 1969 को गुरुदेव को गायत्री सिद्धि हो गई। फिर 1984 में बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी के आशीर्वा से श्री कृष्ण की सिद्धि हो गई। इसलिए सगुण और निर्गुण दोनों सिद्धियाँ होने के कारण से गुरुदेव की तस्वीर से ध्यान लगता है और गुरुदेव द्वारा दिये जाने वाले **''संजीवनी मंत्र''** के प्रभाव से ही मनुष्य मात्र में बड़ा ही अद्भुत बदलाव आ रहा है।

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

सत्य का संहारक युग

कलियुग के गुणधर्म के कारण, आज विश्व भर के अध्यात्म-जगत् से **''सत्य''** प्राय: लोप हो गया है। आज विश्व के प्राय: सभी धर्मों के धर्माचार्यों की कथनी और करनी में भारी अंतर है। यही कारण है, आज विश्व भर में अधिकतर लोगों का धर्म पर से विश्वास उठ चुका है। जैसा धार्मिक होने का हम ढ़िढोरा पीट रहे हैं, प्राय: विश्व के सभी धर्मों के धर्माचार्य भी वैसा ही कर रहे हैं। आज संसार के अन्दर जितना शोर धार्मिक जगत् के लोग मचा रहे हैं, वैसा पहले कभी सुनने में नहीं आया। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर प्राय: रोज सुबह शाम विश्वास करो, विश्वास करो की ध्वनि से वायुमंडल गूँज उठता है। इसके विपरीत विश्व में अशान्ति निरंतर बढ़ रही है। विश्व की यह अशान्ति हमें धर्माचार्यों पर, उनकी विश्वसनीयता पर प्रश्न चिह्न लगाने को विवश कर रही है। आखिर परिणाम न मिलने के कारण का पता लगाये बिना तो समस्या का समाधान नहीं होगा। हम इतिहास पर नजर डालें तो देखते हैं कि विश्व भर में असंख्य साधु-संतों और सच्चे लोगों को विभिन्न प्रकार की यातनाएँ दी गई। धर्म की गिरावट यहाँ तक हो गई कि सच्चे लोगों के प्राण तक ले लिए गए। **परन्तु सच्चे लोगों का साहस देखो, मृत्यु को स्वीकार कर लिया, परन्तु सत्य पर अडिग रहे।** दूसरी तरफ इस युग के लोगों की गिरावट **पराकाष्ठा** तक पहुँच गई। सत्य कहने पर जिसकी हत्या करते हैं, मरने के बाद उन्हीं हत्यारों के वंशज उसको पूजते हैं। महान् आत्मा यीशु ने उस समय के धर्माचार्यों को कहा है- 'हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों ! तुम पर हाय ! तुम भविष्यवक्ताओं की कब्रें संवारते हो और धर्मियों की कब्रें बनाते हो।'

कलियुग के गुणधर्म का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर प्राय: एक जैसा ही पड़ा है। क्रूर निर्दयी और स्वार्थी वृत्तियाँ इतनी प्रबल हो गई हैं कि

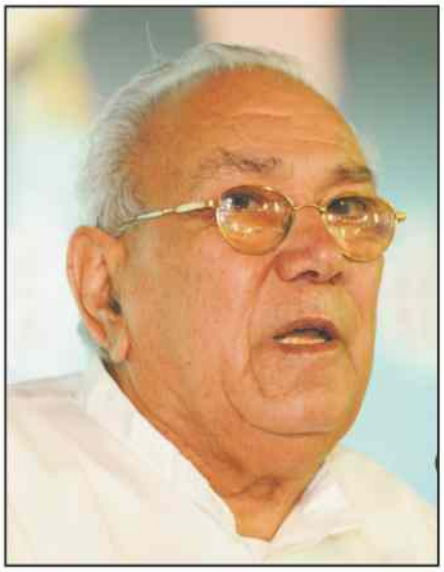

मानवता को कुचलते हुए किसी को तनिक भी दया नहीं आती। कोई भी संत पुरुष विश्व में प्रकट होता है तो उसका पग-पग पर अकारण विरोध होता है। सभी दुष्ट वृत्तियाँ मिलकर उसे कुचलने का प्रयास करती है, उनका वश चलने पर उस साधु पुरुष की हत्या तक कर दी जाती है। वही पुरुष जब ब्रह्मलीन हो जाता है, तो वे वृत्तियाँ **गिरगिट की तरह रंग बदलने में कुछ भी संकोच नहीं करती।** इस प्रकार उस की त्याग, तपस्या और बलिदान का भरपुर लाभ उठाती है। जो लोग कठिन समय में उस संत का साथ देते हैं, उन्हें दुत्कार कर दूर भगा देती है।

इस प्रकार उस महान् आत्मा के नाम से जो मिशन चलता है, उस पर पूर्णरूप से अवसरवादी लोगों का कब्जा हो जाता है। इस प्रकार असंख्य संतों के नाम से चलने वाले मिशनों पर पूर्ण रूप से अवसरवादी लोगों का जमावड़ा है। मुझे कुछ दिन पूर्व ईसाई मिशन की प्रचार सामग्री की एक पुस्तक में कुछ पढ़ने को मिला। मुझे उसे पढ़कर भारी वेदना हुई। ऐसे सुन्दर ढंग से चर्चों में स्वेच्छाचारी जीवन बिताने की छूट ले ली है, जिसे पढ़कर मैं हैरान रह गया। अघोषित चार्वाकवाद पर पर्दा डालते हुए कहा है- 'परमेश्वर का परिवार पापियों से मिलकर बना है। यदि आप परमेश्वर के परिवार के लोगों में पूर्ण या लगभग पूर्ण लोग देखने की अपेक्षा करते हैं तो आपको निराश होना पड़ेगा।' इसे पढ़ते ही १ कुरिन्तियों के ५:१एवं २ बात अचानक याद आ गई। प्राय: सभी धर्मों के मिशनों पर कलियुग का प्रभाव कमोबेश एक जैसा ही पड़ा है। **मैं क्योंकि कर्त्ता मात्र ईश्वर को ही मानता हूँ, संसार के लोग तो उसकी कठपुतली हैं, उन्हें भ्रमाते हुए वह परमसत्ता अपनी इच्छानुसार नचा रही है।** अत: मैं किसी धर्म के धर्माचार्यों को दोष नहीं देता हूँ। वैसे अनेक पवित्र संत प्रकट हुए हैं। परन्तु मैं, मात्र दो ऐसे

www.the-comforter.org

महान् आत्माओं के जीवन काल का वर्णन करना चाहूँगा, जिन्हें आज सम्पूर्ण विश्व श्रद्धा से पूजता है। वे है- महान् आत्मा यीशु मसीह और स्वामी विवेकानंद जी।

महान् आत्मा यीशु ने जिस प्रकार नीली छतरी के नीचे अपना सम्पूर्ण जीवन कष्ट और यातनाएँ सहन करते हुए बिताया, ऐसे उदाहरण दुर्लभ हैं। उसने मानवता में जो चमत्कार पूर्ण कार्य कर दिखाये, वैसे कार्यों को करने की आज का विज्ञान कल्पना तक नहीं कर सकता। परन्तु संसार के क्रूर लोगों ने जो प्रतिफल दिया, वह जग जाहिर है। उसका दोष इतना ही था कि उसने सच्ची बात कह दी कि **'मैं ईश्वर का पुत्र हूँ।'** ईश्वर की आज्ञा से ही मैंने ये चमत्कार पूर्ण कार्य किए। अगर मेरी बात असत्य है तो संसार का कोई धर्म गुरु ऐसे कार्य करके दिखावे। एक मात्र इस दोष के कारण, उस समय के धर्माचार्यों ने उस निर्दोष पवित्रात्मा को मृत्यु दण्ड दिलवा दिया। और आज, उन्हीं धर्माचार्यों के वंशज कण्ठ फाड़-फाड़ कर, उसे ईश्वर का पुत्र स्वीकार कर रहे हैं। क्या एक ही पाप की दो सजा हो सकती है। ईश्वर के घर न देर है और न अन्धेर; पाप का घड़ा भरने पर फूटता ही है।

यीशु मसीह के उस समय के धर्माचार्यों के साथ कैसे मधुर संबंध थे, उसकी सच्ची तस्वीर बाइबल के सैंट मैथ्यु के २३:१३से ३९ को देखने से मिलती है- 'हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों ! तुम पर हाय ! तुम मनुष्यों के विरोध में स्वर्ग के राज्य का द्वार बंद करते हो, न तो आप ही उसमें प्रवेश करते हो और न उसमें प्रवेश करने वालों को प्रवेश करने देते हो।

हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों तुम पर हाय ! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिए सारे जल और थल में फिरते हो, और वह मत में आ जाता है तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो।

हे अन्धे अगुवा, तुम पर हाय ! जो कहते हो कि यदि कोई मंदिर की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मंदिर के सोने की सौंगध खाए तो उससे बन्ध जाएगा। हे मूर्खों और अन्धों, कौन बड़ा है सोना या वह मंदिर; जिससे सोना पवित्र होता है। फिर कहते हो यदि कोई वेदी की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु जो भेंट उस पर है, यदि कोई उसकी शपथ खाएगा तो बंध जाएगा। हे अन्धों, कौन बड़ा है, भेंट या वेदी, जिससे भेंट पवित्र होती है। इसलिए जो वेदी की शपथ खाता है, वह उसकी और जो उस पर है उसकी भी शपथ खाता है। और जो मंदिर की शपथ खाता है वह उसकी और उसमें रहने वाले की भी शपथ खाता है। और जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन की भी शपथ खाता है।

हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय ! तुम पोदीने, सौंफ और जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुमने व्यवस्था की गंभीर बातों की अर्थात् न्याय, दया और विश्वास को छोड़ दिया है। चाहिए तो यह था कि उन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते। **हे अंधे अगुओं, तुम मच्छर को तो छानते हो और ऊँट को निगल जाते हो।**

हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों ! तुम पर हाय, तुम कटोरे और थाली को ऊपर-ऊपर से तो माँजते हो परन्तु वे भीतर असंयम से भरे हुए हैं। हे अन्धे फरीसो ! पहले कटोरे और थाली को भीतर से माँज कि वे बाहर से भी स्वच्छ हो।

हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों ! तुम पर हाय, तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती है,परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलीनता से भरी हुई है। इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हो।

हे कपटी शास्त्रियों और फरिसियो ! तुम पर हाय, तुम भविष्यवक्ताओं की कब्रें सँवारते हो और धर्मियों की कब्रें बनाते हो। और कहते हो कि यदि हम अपने बाप-दादों के दिनों में होते तो भविष्यवक्ताओं की हत्या में उनके साझी न होते। इससे तो तुम अपने पर, आप ही गवाही देते हो, कि तुम भविष्यवक्ताओं के घातकों की सन्तान हो। सो तुम अपने बाप-दादों के पाप का घड़ा भर दो। हे साँपो हे करैतों के बच्चों, तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे ? इसलिए देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यवक्ता भेजता हूँ, और तुम उनमें से कितनों को मार डालोगे और क्रुस पर चढ़ाओगे और कितनों को अपनी सभाओं में कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे। जिससे धर्मी हाबील से लेकर विरिक्याह के पुत्र जकरयाह तक, जिसे तुमने मंदिर और

www.the-comforter.org

वेदी के बीच में मार डाला था, जितने धर्मियों का लोहू पृथ्वी पर बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा। मैं तुम से सच कहता हूँ, ये सब बातें इस समय के लोगों पर आ पड़ेगी।

हे यरुशलेम, हे यरुशलेम तू जो भविष्यवक्ताओं को मार डालता है और जो तेरे पास भेजे गये, उन्हें पत्थर वाह कहता है, कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पँखों के नीचे इकट्ठे करती है, वैसी ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे कर लूँ, परन्तु तुमने न चाहा। देखो ! तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि अब से जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है। तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।'

स्वामी श्री विवेकानंद जी की ही देन है, जो सम्पूर्ण विश्व आज हमारे वैदिक दर्शन की ओर तेजी से झुक रहा है। **स्वामी जी ने शिकागो धर्म-महासभा में सन् 1893 में वैदिक दर्शन की विजय पताका फहराई थी।** आज भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में, स्वामी जी का नाम बहुत ही श्रद्धा से लिया जाता है। परन्तु स्वामी जी को अपने जीवन काल में यीशु मसीह की तरह अपने देश के लोगों से सहयोग और प्रेम नहीं मिला। इस तथ्य का प्रमाण; स्वामी जी के अमेरिका से लिखे पत्र देते हैं।

अत: मैं उन पत्रों को स्वामी जी की भाषा में ही यथावत लिख रहा हूँ। इन पत्रों से उस समय का आध्यात्मिक जगत् में कार्य करने वाले लोगों की वस्तु स्थिति का भान होता है।

दिनांक 28/12/1893 को शिकागो से लिखा पत्र-'भारत के लाख-लाख अनाथों के लिए कितने लोग रोते हैं? हे भगवान् क्या हम मनुष्य है? तुम लोगों के घरों के चतुर्दिक जो पशुवत् भंगी डोम हैं, उनकी उन्नति के लिए क्या कर रहे हैं? उनके मुँह में एक ग्रास अन्न देने के लिए क्या करते हो? बताओ न उन्हें छूते भी नहीं और उन्हें दूर-दूर कह कर भगा देते हो। क्या हम मनुष्य

हैं? वे हजारों साधु-ब्राह्मण भारत की नीच, दलित, दरिद्र जनता के लिए क्या कर रहे हैं? **'मत छू'-'मत छू'** बस यही रट लगाते हैं। उनके हाथों; हमारा सनातन धर्म कैसे तुच्छ और भ्रष्ट हो गया है। अब हमारा धर्म किसमें रह गया है। केवल छूआछूत में **'मुझे छूओ नहीं' 'छूओ नहीं।'** (*-द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद-वॉल्युम-5*)

दिनांक 24 जनवरी 1894 को शिकागो से लिखा पत्र-'जहाँ तक अमेरिकी महिलाओं का प्रश्न है, उनकी कृपा के लिए मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करने में असमर्थ हूँ। भगवान् उनका भला करे। इस देश के प्रत्येक आन्दोलन की जान महिलाएँ है। और राष्ट्र की समस्त संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है, क्योंकि पुरुष तो अपने ही शिक्षा लाभ में अत्यधिक व्यस्त है।' (*- द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद- वॉल्युम-5*)

अमेरिका से ही 1894 में खेतड़ी के राजा को लिखा पत्र-'अमेरिकन महिलाओं ! सौ जन्म में भी, मैं तुम से उऋण न हो सकूँगा। मेरे पास तुम्हारे प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने की भाषा नहीं है। प्राच्य अतिशयोक्ति ही प्राच्यवासी मानवों की आन्तरिक कृतज्ञता प्रकट करने की एक मात्र भाषा है-'यदि समुद्र मसि-पात्र हिमालय पर्वत मसि, पारिजात वृक्ष की शाखा लेखनी तथा पृथ्वी पत्र हो तथा स्वयं सरस्वती लेखिका बनकर अनन्त काल तक लिखती रहे, फिर भी तुम्हारे प्रति मेरी कृतज्ञता प्रकट करने में ये सब समर्थ न हो सकेंगे।' (*- द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद-वॉल्युम-6*) स्वामी जी की उपर्युक्त व्याख्या स्पष्ट करती है कि अमेरिका की सम्पन्नता का मुख्य कारण उस देश की **गृहलक्ष्मियाँ** ही है। विश्व के कुछ देश ईर्ष्यावश कुछ भी कहें, जिस देश में ऐसी नारियाँ होगी, उस देश की सम्पन्नता अक्षय होगी।

3 मार्च 1894 को लिखा पत्र-'तुमने मांस भोजी क्षत्रियों की

www.the-comforter.org

बात उठाई है। क्षत्रिय लोग चाहे मांस खाये, वे ही हिन्दू धर्म की उन सब वस्तुओं के जन्म दाता है, जिनको तुम महत्त और सुन्दर देखते हो। उपनिषद किसने लिखी थी? राम कौन और कृष्ण कौन थे? बुद्ध कौन थे? जैनों के तीर्थंकर कौन थे? जब कभी क्षत्रियों ने उपदेश दिया, उन्होंने सभी को धर्म पर अधिकार दिया। और जब कभी ब्राह्मणों ने कुछ लिखा, उन्होंने औरतों को सब प्रकार के अधिकारों से वंचित करने की चेष्टा की। गीता या व्यास सूत्र पढ़ो या किसी से सुन लो, गीता में मुक्ति की राह पर सभी नर-नारियों, सभी जातियों और सभी वर्णों को अधिकार दिया गया है, परन्तु व्यास गरीब शुद्रों को वंचित करने के लिए वेद की मनमानी व्याख्या करने की चेष्टा करते हैं। **क्या ईश्वर तुम जैसा मूर्ख है कि एक टुकड़े मांस से उसकी दया रूपी नदी के प्रवाह में बाधा खड़ी हो जायेगी।** अगर वह ऐसा ही है, तो उसकी मोल एक फूटी कौड़ी भी नहीं।' *(- द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद- वॉल्युम-4)*

19 मार्च 1894 को शिकागो से लिखा पत्र-'हम जैसे कूपमण्डूक दुनिया में नहीं हैं। कोई भी नई चीज किसी देश से आवे तो अमेरिका उसे सबसे पहले अपनाएगा। और हम? अजी, हमारे ऐसे ऊँचे खानदान वाले दुनिया में और है ही नहीं। हम तो आर्यवंशी जो ठहरे! कहाँ है वह आर्यवंश उसे तो हम जानते ही नहीं। एक लाख लोगों के दबाने से तीस करोड़ लोग कुत्ते के समान घूमते हैं, और वे आर्यवंशी हैं!'

19 मार्च 1894 को ही शिकागो से लिखा एक पत्र-'जिस देश में करोड़ों मनुष्य महुआ खाकर दिन गुजारते हैं, और दस बीस लाख साधु और दस बारह करोड़ ब्राह्मण, उन गरीबों का खून चूसकर पीते हैं, और उनकी उन्नति के लिए कोई चेष्टा नहीं करते, क्या वह देश है या नरक? क्या यह धर्म है या पिशाच का नृत्य? भाई इस बात को गौर से समझो। मैं भारत को घूम-घूमकर देख चुका हूँ और इस देश को भी देखा है। क्या बिना कारण, कहीं कार्य होता है? क्या बिना पाप के सजा मिल सकती है? *(- द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद-वॉल्युम-6)*

मैं एक ऐसे विचित्र स्वभाव का व्यक्ति हूँ कि यह पहचानना तुम लोगों के लिए भी अभी संभव नहीं है। तुम अपना काम करते रहो, नहीं कर सकते तो चुप चाप बैठ जाओ। अपनी मूर्खता के बल पर मुझसे अपनी इच्छानुसार कार्य कराने की चेष्टा न करो। मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं, जीवन भर मैं ही दूसरों की सहायता करता रहा हूँ।

अगस्त 1894 में अमेरिका से लिखा पत्र-'वास्तव में भारत ने मेरे लिए जो किया उससे कहीं अधिक मैंने भारत के लिए किया है। वहाँ तो मुझे रोटी के एक टुकड़े के लिए डलिया भर गालियाँ मिलती हैं। मैं कहीं भी क्यों न जाऊँ, प्रभु मेरे लिए काम करने वालों के दल के दल भेज देता है। वे लोग भारतीय शिष्यों की तरह नहीं हैं, अपने **गुरु** के लिए प्राणों तक की बाजी लगा देने को प्रस्तुत है।

पाश्चात्य देशों में प्रभु क्या करना चाहते हैं, यह तुम हिन्दुओं को कुछ ही वर्षों में देखने को मिलेगा। तुम लोग प्राचीन काल के यहूदियों जैसे हो, और तुम्हारी स्थिति नाँद में लेटे हुए कुत्ते की तरह है, जो न खुद खाता है, और न दूसरों को खाने देना चाहता है। तुम लोगों में किसी प्रकार की धार्मिक भावना नहीं है, रसोई ही तुम्हारा ईश्वर है तथा हंडिया बर्तन ही तुम्हारा शास्त्र। अपनी तरह असंख्य सन्तानोत्पादन में ही तुम्हारी शक्ति का परिचय मिलता है। *(- द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद- वॉल्युम-5)*

9 सितम्बर 1894 को पेरिस से लिखा गया पत्र-'मैं जैसे भारत का हूँ, वैसे ही समग्र जगत् का भी हूँ। इस विषय को लेकर मनमानी बातें बनाना निरर्थक है। मुझसे जहाँ तक हो सकता था, मैंने तुम लोगों की सहायता की है, अब तुम्हें स्वयं ही अपनी सहायता करनी चाहिए। ऐसा कौन सा देश है, जो कि मुझ पर विशेष अधिकार रखता है? क्या मैं किसी जाति के द्वारा खरीदा हुआ दास हूँ? अविश्वासी नास्तिकों, तुम लोग ऐसी व्यर्थ की मूखर्ता पूर्ण बातें मत बनाओ। मैंने कठोर परिश्रम किया है और जो धन मिला है, उसे मैं कलकत्ते और मद्रास भेजता रहा हूँ। यह सब करने के बाद, अब मुझे उन लोगों के मुर्खतापूर्ण निर्देशानुसार चलना होगा?

क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती? मैं उन लोगों का किस बात का ऋणी हूँ? क्या मैं उनकी प्रशंसा की कोई परवाह करता हूँ या उनकी निंदा से डरता हूँ? बच्चे! मैं एक ऐसे विचित्र स्वभाव का व्यक्ति हूँ कि यह पहचानना तुम लोगों के लिए भी अभी संभव नहीं है। **तुम अपना**

www.the-comforter.org

काम करते रहो, नहीं कर सकते तो चुप चाप बैठ जाओ। अपनी मूर्खता के बल पर मुझसे अपनी इच्छानुसार कार्य कराने की चेष्टा न करो। मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं, जीवन भर मैं ही दूसरों की सहायता करता रहा हूँ।

श्री रामकृष्ण परमहंस के कार्यों के लिए सहायता प्रदान करने के लिए जहाँ के निवासी दो चार रुपये भी एकत्र करने की शक्ति नहीं रखते हैं, वे लोग लगातार व्यर्थ की बातें बना रहे हैं और उस व्यक्ति पर अपना हुक्म चलाना चाहते हैं, जिसके लिए उन्होंने कभी कुछ नहीं किया; प्रत्युत जिसने उन लोगों के लिए जहाँ तक हो सकता था, सब कुछ किया। **''जगत् ऐसा ही अकृतज्ञ है।''** क्या तुम यह कहना चाहते हो कि ऐसे जातिभेद जर्जरित कुसंस्कार युक्त, दयारहित, कपटी, नास्तिकों एवं कायरों में से जो केवल शिक्षित हिन्दुओं में ही पाये जा सकते हैं, एक बनकर जीने मरने के लिए, मैं पैदा हुआ हूँ। मैं कायरता से घृणा करता हूँ। कायर तथा मूर्खतापूर्ण बकवासों के साथ, मैं अपना सम्बध नहीं रखना चाहता। किसी प्रकार की राजनीति में मुझे विश्वास नहीं है। ईश्वर तथा सत्य ही जगत् में एक मात्र राजनीति है, बाकी सब कूड़ा करकट है।' *(- द कम्पलीट वर्क्स् ऑफ स्वामी विवेकानंद- वॉल्युम-5)*

आज से करीब सौ साल पहले हमारे देश की धार्मिक दृष्टि से क्या स्थिति थी, स्वामी जी के उपर्युक्त पत्रों से स्पष्ट होती है। पिछले सौ सालों में हमारे धार्मिक जगत् में युग के गुणधर्म के कारण कुछ गिरावट ही आयी है। जिनके वंशजों ने स्वामी के साथ कैसा व्यवहार किया, परन्तु आज संपूर्ण देशवासी स्वामी जी के गुणगान करते नहीं थकते। इसी प्रकार की अकर्मण्य एवं स्वार्थीवृत्ति ने सनातन धर्म को रसातल में पहुँचा दिया है। इसमें मैं कलियुग के गुणधर्म को ही दोषी मानता हूँ। मनुष्य तो कठपुतली है, वह परमसत्ता जिस प्रकार नचाना चाहती है नचा रही है।

ऐसा लगता है ईसाई जगत् अपने ही धार्मिक ग्रंथ की भविष्यवाणियों से ही अत्यधिक भयभीत हैं। उनके अन्दर अन्तर्द्वन्द्व छिड़ गया है। जीवन में यही एक स्थिति ऐसी है, जिसके छिड़ जाने से मनुष्य स्वयं अपने ही प्रयासों से खत्म हो जाता है।

❖❖❖

कहानी

समर्पण ही ज्ञान प्राप्ति का साधन

पुराने समय की बात है। एक ब्रह्मचारी ने विभिन्न विद्याओं का अध्ययन पूर्ण कर लिया था और अब वह आत्मविद्या का ज्ञान प्राप्त करना चाहता था। इस इच्छा की पूर्ति के लिए वह एक प्रसिद्ध **ऋषि** के आश्रम में पहुँचा। ऋषि ने उसे आश्रम में रहने की आज्ञा दे दी। ब्रह्मचारी को वहाँ सेवा करते-करते कई दिन बीत गए, किन्तु उसका अध्ययन आरंभ नहीं हुआ। इससे उसके मन में कई तरह की शंकाएँ पैदा होने लगी। उसे लगने लगा कि किन सांसारिक कार्यों के झमेले में पड़ गया था।

एक दिन जब वह घड़ा लेकर पानी भरने तालाब पर पहुँचा तो **गुस्से** व **संताप** में जल रहा था। उसने जोर से घड़ा रेत पर पटका और वहीं बैठ गया। तभी घड़े से आवाज आई, **'तुम इतना क्रोध और उतावलापन क्यों दिखाते हो?** गुरु ने यदि तुम्हें शरण दी है तो निश्चित ही देर-सबेर तुम्हारी मनोकामना भी पूर्ण होगी।' सुनकर ब्रह्मचारी बोला, 'मैं यहाँ दुनियादारी के काम करने नहीं, **आत्मविद्या** प्राप्त करने आया हूँ।

इस पर घड़े ने कहा, 'सुनो मित्र, मैं पहले सिर्फ एक **मिट्टी का डला** था। पहले कुम्हार ने मुझे लेकर कूटा, गलाया और कुछ दिनों तक अपने पैरों तले भी रौंदा। इसके बाद उसने मुझे आकार दिया और **भट्टी में तपाया**। इस सबकी बदौलत आज मैं तुम्हारे सामने इस रूप में मौजूद हूँ। यदि तुम भी आगे बढ़ना चाहते हो तो परेशानियों से घबराना नहीं, **बस अपने कर्म में लगे रहना।'**

यह सुनकर ब्रह्मचारी का क्रोध दूर हो गया। उसने संकल्प लिया कि वह **गुरु के आदेश** पर **पूरे समर्पण भाव** से चलेगा। उसके आचरण में आए इस बदलाव को ऋषि ने भी पहचान लिया। शिष्य द्वारा सच्चा समर्पण का पाठ सीखने के बाद ही उसकी शिक्षा आरंभ हुई और आगे चलकर वह एक प्रसिद्ध **आत्मतत्त्ववेत्ता ऋषि** बना। ❖❖❖

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग

संस्था की वेबसाइट (www.the-comforter.org), यू-ट्यूब चैनल (Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY), फेसबुक (Avsk Jodhpur, Gurudev Siyag SiddhaYoga Avsk) व अन्य सोशल मीडिया से जानकारी प्राप्त कर जोधपुर मुख्यालय में वाट्सऐप व फोन पर हुई बातचीत के कुछ अंश-

न्यूजीलैण्ड देश
श्री राजेन्द्र कुमार-88 वर्ष
15.12.2019

''मैं भारत के पंजाब राज्य के लुधियाना जिले का निवासी हूँ। पिछले 20 वर्षों से सपरिवार न्यूजीलैण्ड में रहता हूँ। मैं पिछले 15 दिन से यू-ट्यूब (Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) से मंत्र वीडियो सुनकर मंत्र जप और ध्यान कर रहा हूँ। मेरे शरीर में वायब्रेशन होता है। बहुत आनंद आता है। मैं इस योग की गहराई में उतरना चाहता हूँ।

मेरा 16 साल का एक पौता है, वह चल-फिर नहीं सकता है, मिर्गी की शिकायत है क्या उसके लिए कुछ हो सकता है ? मुझे उसकी बहुत चिंता है।'' तब उनको आश्रम से सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी दी गई और प्रचार सामग्री भेजी गई।

बैंगलोर (कर्नाटक)
श्रीमती अनिता पटेल
20.12.2019

''मैं आज सवेरे 4 बजे जब ध्यान में बैठी तो मेरे साथ कुछ अजीब सी क्रियाएँ होने लगीं। सिर के अंदर कुछ झुम झुम सा हुआ, फिर मुझे नांद सुनाई देने लगा। आज मुझे तीन प्रकार की नांद सुनाई दी-जिंगुर की आवाज, घण्टियों की आवाज और तबलों की आवाज। मेरा मन इन आवाजों पर एकाग्र हो गया। मन में असीम शांति पसर गई। बहुत अच्छा लग रहा था। ध्यान से उठने का मन ही नहीं हो रहा था, पर गुरुदेव के आदेश को ध्यान में रखते हुए मैं उठ गई।''

इनको करीब ढाई-तीन महिने हो गए हैं ध्यान करते हुए। बहुत अच्छी अनुभूति हो रही है। इनको सर्वप्रथम गुरुदेव की जानकारी, इनके अपने पहले के गुरुदेव का ध्यान करते वक्त हुई थी। ध्यान में ही गुरुदेव की तस्वीर दीखी थी। तब से यह साधिका नियमित रूप से समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग द्वारा बताए मंत्र का सघन जप और ध्यान कर रही है और अद्भुत अनुभूतियाँ हो रही हैं।

सघन मंत्र जप और ध्यान ही जीवन के सर्वांगीण विकास का मुख्य साधन है।

नाद-आराधना की शुरूआत में सद्गुरुदेव द्वारा बताए गए मंत्र (नाम, शब्द) का मानसिक जप करना होता है। कुछ दिन तक गंभीरतापूर्वक सघन मंत्र जपने पर वह **'अजपा'** हो जाता है। **भीतर ही भीतर स्वतः ही मंत्र का जपा जाना अजपा जाप कहलाता है।** अजपा जाप की गति तीव्र और तीव्रतर हो जाती है जो कि संख्या में नहीं आ सकती है, और मंत्र किसी ध्वनि में बदल जाता है। विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ जैसे कि जिंगुर, घण्टियाँ, बंशी आदि की आवाज सुनाई देती हैं, इसे नाद कहते हैं।

नरसिंहपुरा (मध्यप्रदेश)
डॉ. अनसुइया मेहरा
22.12.2019

''समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग सिद्धयोग से, मैं धन्य हो गई। **मैं कुछ भी नहीं थी।** आज मैंने बहुत सी चीजों में सफलता प्राप्त कर ली है। इतना अद्भुत विज्ञान है। मेरे पास बोलने के लिए कोई शब्द नहीं है। मैं पेशे से एक डॉक्टर हूँ। अभी मैं पिछले तीन दिन से भयंकर सिर दर्द से परेशान थी। दवाईयाँ खाई, चैकअप करवा लिया लेकिन दर्द कम नहीं हो रहा था। मैं सुबह जल्दी उठकर गुरुदेव से प्रार्थना करके ध्यान में बैठ गई। दुनिया को बड़ा ताजुब होगा सुनकर के और अविश्वसनीय लेकिन मैं एक डॉक्टर के रूप में कह रही हूँ कि मेरा कुछ ही पलों में सिर दर्द गायब और इतनी भीतर से शांति हो गई, आनंद की अनुभूति हुई जिसके लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है। गुरुदेव को कोटि कोटि धन्यवाद। मैं गुरुदेव के पावन चरण कमलों में कोटि -कोटि प्रणाम करती हूँ।''

13 नवम्बर 2019 को प्रथम बार आश्रम में कॉल करके गुरुदेव सियाग सिद्धयोग दर्शन के विषय में जानकारी प्राप्त की थी। उसके बाद नियमित ध्यान

www.the-comforter.org

और मंत्र जप से यह अद्भुत बदलाव आया है।

नई दिल्ली

श्रीमती विजया

22.12.2019

उत्थापन सिद्धि

(सिद्धयोग साधना में साधक गुरुत्वाकर्षण बल से मुक्त होकर हवा में सशरीर ऊपर उठ जाता है। कई बार ध्यान के दौरान हवा में उड़ने का आभास भी होता है।)

''मैं गुरुदेव से 10 अक्टूबर 2019 से जुड़ी हूँ। मेरी एक बहुत ही विचित्र अनुभूति शेयर कर रही हूँ कि-19 दिसम्बर 2019 को मैंने गुरुदेव से प्रार्थना कि मेरा 15 मिनट के ध्यान लग जाएं और मैं ध्यान में बैठ गई। जो सुबह 7:48 से 9:00 बजे तक चला। 15 मिनट से बहुत ज्यादा समय हो गया था। *(गुरुदेव से ध्यान के लिए समय माँगकर बैठने के बाद भी ध्यान ज्यादा समय तक इसलिए लगा रहता है कि साधक को ध्यान में बहुत आनंद आता है, इसलिए वह ध्यान खुलने के बाद भी वापस ध्यान में चला जाता है। इसलिए साधक को ही सावधानी रखनी चाहिए।)* उसके बाद मैं मंत्र जप लगातार (Round the clock) शुरू किया। पलंग पर लेटे-लेटे ठीक 9:00 बजे से 10:00 बजे तक मंत्र जप चल ही रहा था कि अचानक मुझे शरीर में ऊर्जा का अनुभव हुआ- जैसे रॉकेट पूरी शक्ति के साथ ऊपर आसमान में जाता है ठीक वैसा ही मुझे मेरे शरीर में मंत्र जप के दौरान अनुभव हुआ कि कोई मेरे पैरों के अंगुठे को जोर से पकड़ कर मुझे पलंग से ऊपर उठा रहा है। और ऐसा कई बार हुआ। मेरे और मेरे कमरे के पंखे के बीच केवल आधे हाथ की दूरी रही होगी मैं इतनी ऊपर उठी और फिर मुझे पलंग पर छोड़ा गया, ऐसा चार बार हुआ मुझे कोई चोट नहीं आयी किंतु जो भी था मुझे बहुत अच्छा लगा।

लेटे-लेटे ही मेरी आँख खुली, मुझे थोड़ा डर लगा किंतु मैंने सोचा यह गुरुदेव की कृपा से ही हो रहा है। मैं गुरुदेव की आभारी हूँ उन्होंने मुझे यह अनुभूति प्रदान की।''

मैंने किसी वीडियो में गुरुदेव के श्रीमुख से एक ऐसी ही अनुभूति का जिक्र सुना था कि 1997 में जोधपुर में एक लड़की ध्यान के दौरान जमीन से डेढ़ फीट ऊपर उठ गई थी तब मुझे यह बात अजीब सी और अविश्वसनीय बात लगी थी लेकिन जब ऐसा मेरे साथ हुआ तो मुझे लगा कि यह पल कितना खूबसूरत और अद्भुत था।

दो-ढाई महिने से सघन मंत्र जप और नियमित ध्यान करने से जीवन में बड़ा ही अद्भुत बदलाव आया है। योग की बहुत सी क्रियाएँ स्वतः ही होती रहती हैं।

धारूहेड़ा (रेवाड़ी) हरियाणा

श्री रामलाल जी यादव-45 वर्ष

22.12.2019

24 घण्टे अजपा की झड़ी

''जय श्री सत्गुरु महाराज की

मैंने यू-ट्यूब देखकर गुरुदेव का मंत्र जप और ध्यान शुरू किया था। कुछ दिन किया कुछ अच्छा लगने लगा फिर और जानकारी प्राप्त करने के लिए गुरुदेव के जोधपुर आश्रम पर कॉल करके विस्तृत जानकारी प्राप्त की। वैसे मैं पिछले 10 साल से धार्मिक क्षेत्र से जुड़ा हुआ हूँ। 2-2 घण्टे बैठकर ध्यान भी लगाया लेकिन कोई प्रत्युतर नहीं था, बस कर लेता था।

जब से गुरुदेव के विषय में जानकारी मिली तब से गहरे ध्यान के लिए मैं प्रयास कर रहा था, कई लोगों के सोशल मीडिया पर अनुभव भी पढ़े। उससे मेरी भी लालचा बढ़ी कि काश मुझे भी कुछ दिख जाये लेकिन कुछ समय तक कोई खास अनुभव नहीं हुआ। बस ध्यान के दौरान खींचाव होता था, मन में शांति मिलती थी।

जोधपुर आश्रम से मुझे कुछ प्रचार सामग्री भेजी गई। 20 दिसम्बर को मेरे पास आश्रम से सामग्री पहुँची और उसी रात मुझे स्वप्न में गुरुदेव के दर्शन हुए। बहुत अद्भुत दर्शन हुए। मेरा रोम-रोम हर्षित हो गया। मुझे लगा कि **''प्रचार सामग्री के पार्सल के साथ ही मेरे गुरुदेव मेरे घर आ गए।''** ये मैं हकीकत कह रहा हूँ। इतने दिन से मैं कर रहा था लेकिन इतना साफ नहीं दिख रहा था, अब आज्ञाचक्र पर खिंचाव होता है। रीढ़ की हड्डी के पीछे झटके लगते हैं, दायां कान ध्यान के दौरान ज्यादा ही फड़फड़ाता है। ये मेरे पहले भी होता था लेकिन अब यह फड़फड़ाहट ज्यादा ही हो गया है।

24 घंटे मेरे अजपा लगा रहता है।

पहले मैं दो घंटे से ज्यादा ध्यान करता था लेकिन अब गुरु आज्ञा के अनुसार सिर्फ 15 मिनट ही ध्यान करता हूँ। अब खूब आनंद आता है।

अब मेरी इच्छा होती है कि एक बार मैं गुरुदेव के आश्रम पहुँच उनकी चरण धूली को अपने सिर पर धारण करूं। मुझे अंदर से महसूस हो रहा है कि जोधपुर आश्रम में मुझे और ज्यादा ताकत मिलेगी और मैं ध्यान की गहराई में पहुँच पाऊँगा।''

''देखो जी हकीकत है जो बताई है मैंने-कल सामग्री पहुँची और आज रात को सपने में गुरुदेव के दिव्य दर्शन हुए। बिलकुल स्पष्ट। इतने दिन तक इतना स्पष्ट

www.the-comforter.org

दर्शन नहीं हुआ था।''

इन्होंने बताया कि अब बस सत्य से साक्षात्कार हो गया है, बस समाज सेवा के तौर पर ज्यादा से ज्यादा लोगों को गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन के बारे में बताना है।

सहारनपुर (उ.प्र)
श्री सुशील कुमार-30 वर्ष
8.12.2019

मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव का प्रवचन सुना था। मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं मानसिक अवसाद में जी रहा था। थोड़े समय पहले ही मेरे बड़े भाई की कैंसर से मृत्यु हो गई। वीडियो सुनने के बाद मुझे लगा कि काश पहले ये वीडियो मिल जाता तो मेरे भाई की मृत्यु टल जाती। मुझे इसमें बहुत सच्चाई लगी। मेरे पूरे घर वाले भाई की मृत्यु की वजह से गहरे सदमें में है। इसलिए मैंने उन सबको गुरुदेव के प्रवचन के वीडियो सुनाकर, ध्यान कराया है, उससे उनके मन में कुछ बदलाव आया है। मुझे क्या करना चाहिए, जिससे हम सत्य को समझ सके?''

फिर आश्रम से उनको सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी दी गई।

सोनीपत (हरियाणा)
सेवानिवृत्त IG Police
14.12.2019

इन्होंने फोन पर बताया कि 8-9 साल पहले टी.वी पर गुरुदेव का कार्यक्रम देखकर प्रभावित हुई और बताई गई विधि के अनुसार मंत्र जप और ध्यान करने से बहुत अच्छा महसूस हुआ। तब से लगातार मंत्र जप और ध्यान कर रही है। सद्गुरुदेव के प्रति इस सहज और सरल विधि के लिए गहरा सद्भाव और आस्था है। वर्तमान में यू-ट्यूब (Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) पर गुरुदेव के प्रवचन सुनती रहती है।

आश्रम से नये वर्ष 2020 के कैलेण्डर, स्पिरिचुअल साइंस मासिक पत्रिका और फोटो आदि सामग्री भेजी गई।

सामग्री पहुँचने पर बहुत खुश हुई और आश्रम को धन्यवाद ज्ञापित किया। जोधपुर मुख्यालय पर समय समय पर कॉल कर जानकारी लेती रहती है।

Ghana (Africa)
Mr. Harry Tetty
18.12.2019

पिछले 2-3 महिने से यू-ट्यूब (Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) देख रहा हैं। संस्था की वेबसाइट पर भी पूरी जानकारी पढ़ी है। थर्ड आई एक्टिव कराना चाहते हैं। अफ्रिका में सिद्धयोग दर्शन का प्रचार-प्रसार करना चाहता है।

जाजपुर (उड़ीसा)
श्री देवेन्द्र मिश्रा
19.12.2019

ये मूलत: सूरत के निवासी है। और पिछले लम्बे समय से जाजपुर के एक गाँव में सांई बाबा के मंदिर में पूजा-पाठ करते हैं। यू-ट्यूब (Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखा है। उन्होंने कहा कि ''मुझे बहुत अच्छा लगा। मेरे शरीर में बहुत तकलीफ है। मैं यह ''**सिद्धयोग**'' ध्यान करना चाहता हूँ।''

उन्होंने कहा कि मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं को सिद्धयोग के बारे में बता सकूं इसलिए उन्हें कुछ प्रचार सामग्री भेजें।

जोधपुर आश्रम से सन् 2020 के कैलेण्डर, पुस्तकें, पेम्पलेट्स, कार्ड आदि प्रचार सामग्री भेजी गई।

नासिक (महाराष्ट्र)
श्री मुन्द्रिका राय यादव
20.12.2019

''मैं फौज में नौकरी करता हूँ। मूलत: उत्तरप्रदेश का रहने वाला हूँ। मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखा है। मुझे बहुत ही अच्छा लगा। मैं अपनी ड्यूटी पर भी मंत्र जपता रहता हूँ। मैं यहाँ पर गुरुजी का प्रचार करना चाहता हूँ। कृपया मुझे प्रचार सामग्री भेजी जाएँ।'' उनको आश्रम से प्रचार सामग्री भेजी गई।

श्रीराम नगरी अयोध्या (उ.प्र)
श्री अशोक उपाध्याय
24.12.2019

मैंने डेढ़ महिना पहले यू-ट्यूब (Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव का प्रवचन सुनकर मंत्र जप और ध्यान शुरू किया था। तब से जीवन में खुशहाली आई है। साल भर पहले एक दुर्घटना में फ्रेक्चर हो गया था। उसका भी दर्द था। अभी तक गहरा ध्यान नहीं लगता है लेकिन मुझे इतना आभास हो गया कि मैं सब कुछ पा लूँगा, गुरुदेव की आराधना से।

उन्होंने बताया कि ''मैंने मन में ठान लिया था कि एक बार गुरुदेव की कर्मस्थली जोधपुर आश्रम जाकर आऊँगा। दो बार ट्रेन टिकट रद्द हो गया लेकिन हिम्मत नहीं हारी।

अभी कोहरा बहुत है। बच्चों ने मना किया कि ऐसे कोहरे में बाहर जाना ठीक नहीं है। लेकिन मैं पूरा मन बना चुका था और अपनी पत्नी के साथ कार किराये कर आज पहुँच ही गया।

बहुत गहरा आनंद आया।

www.the-comforter.org

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग का कमाल

जीवन में समर्थ सद्गुरुदेव की प्राप्ति और आध्यात्मिक अनुभूतियों से सराबोर

परम पूज्य समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग और बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी (ब्रह्मलीन) के पावन चरण कमलों में कोटि-कोटि नमन्।

इस शरीर को इस संसार में विजय कृष्ण शास्त्री के नाम से जाना जाता है सन् 2001 से श्रीमद् भागवत का प्रवचन करता हूँ। जिन गुरुदेव ने श्रीमद् भागवत की शिक्षा दी उनसे दीक्षा लेकर कथा करना प्रारंभ कर दिया। आनंद के साथ प्रभु की भक्ति में जीवन निकलने लगा।

अचानक मेरा मन **योग एवं ध्यान** की ओर हुआ और मैं योग गुरु की तलाश में ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि प्रभु मुझे ऐसे योग गुरुदेव का सानिध्य प्राप्त हो कि मेरा जीवन धन्य हो जाये। मैंने योग को सीखने के लिए बहुत प्रयास किया है। श्री योगानंद जी का क्रिया योग सीखने का मानस बना रहा था। समय निकलता गया और एक दिन मैं **यू-ट्यूब** पर वीडियो देख रहा था कि अचानक पूज्य गुरुदेव का एक वीडियो जिसमें **सिद्धयोग, कुण्डलिनी जागरण और संजीवनी मंत्र** के बारे में गुरुदेव बतला रहे थे। मुझे तो मानो ज्ञान का खजाना ही मिल गया।

मैंने मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया। सिर में भारीपन महसूस हुआ, मैंने जाप बंद कर दिया। एक बार तो पूरा शरीर ही सुन्न पड़ गया था। इस बात से मैं डर गया। कई लोगों ने बताया कि बिना गुरु के ऐसा करने पर शरीर छूट भी सकता है तो मुझे भय बैठ गया।

इसके बाद भी मेरे मन में इस योग के प्रति जिज्ञासा बनी रही और मैं लगातार प्रयास करता रहा।

उसके बाद जोधपुर आश्रम पर ईमेल के द्वारा मंत्र दीक्षा ली गुरुदेव और दादा गुरुदेव का फोटो भी मुझे प्राप्त हुआ और मैं ध्यान करने लगा।

गुरुदेव और दादा गुरुदेव की कृपा से ध्यान में अनेक प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं।

पहले गर्दन की विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ हुई, इसके बाद प्राणायाम होना प्रारंभ हो गया, कुंभक लगने लगा, कभी आंतरिक कुंभक लगता कभी बाह्य कुंभक लगता हैं।

ध्यान में एक दीपक से अनेक दीपक प्रज्वलित होते हुए दिखाई दिए। एक बहुत बड़ा शक्तिपुँज दिखाई दिया जिसमें से दीपक निकल रहे थे और उन दीपकों ने एक **वृत्त** बना लिया, **उसके बाद एक गहरा नीला प्रकाश बहुत गहरा होता चला गया।**

बंध लगने लगे-मूलाधार बंध, मणिबंध, जालंधर बंध, उड्डियान बंध, जालंधर बंध लगने पर कंठ में वायब्रेशन होने लगा।

उसी समय हमने श्री नागर दास जी जो मुम्बई से गुरुभाई हैं, उनके अनुभवों को सुना तो उनसे फोन पर बात की। उन्होंने गुरुदेव और दादा गुरुदेव के बारे में बहुत सारी बातें बताई।

सुबह ध्यान करने के बाद गुरुदेव की कृपा से खुली आँखों से पतंजलि योग के अनुसार बंध, मुद्राएँ, प्राणायाम और अनेक प्रकार की शारीरिक क्रियाएँ होती हैं।

आज खुली आँखों से हाथों से शंख की मुद्र बनी और शंख नाद हुआ उसके बाद हाथों से बांसुरी की मुद्रा बनी और बांसुरी बजने लगी। ऐसा आनंद कि जिसका वर्णन करना बड़ा मुश्किल है।

गुरुदेव और दादा गुरुदेव की कृपा से खेचरी मुद्रा भी लगती है। जीवन धन्य हो गया, ना जाने कितने जन्म जन्मान्तर से जिस आनंद की तलाश थी, वह आनंद गुरुदेव और दादा गुरुदेव की कृपा से प्राप्त हो रहा है।

सिद्धयोग और संजीवनी मंत्र के द्वारा नेत्रों की ज्योति बढ़ गई और वायु विकार के कारण दांई तरफ चक्कर आते थे सारी समस्याएँ दूर हो गई।

गुरुदेव के बताए पथ पर चलने से जीवन की दिशा बदल गई। अब यही प्रार्थना है कि गुरुदेव सत्पथ पर चलाते रहें। जय गुरुदेव

-विजय कृष्ण शास्त्री
गाँव-बल्लभगढ़
भरतपुर (राज.)

www.the-comforter.org

सिद्धयोग से संभव हुआ आनंदमय जीवन जीना

मानसिक तनाव, फोबिया (अकारण भय लगना), चर्म रोग, बालों का झड़ना, दांत दर्द, कब्ज़, बवासीर, डरावने सपनों व तामसिक शक्तियों से मुक्ति मिली।

सर्वप्रथम गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग व दादा गुरदेव श्री गंगाईनाथ जी योगी को कोटि कोटि प्रणाम।

मैं मुकेश चौधरी, उम्र-34 वर्ष, अजमेर का निवासी हूँ। मैं सन् 2005 में दीपावली पर डीप्रेशन में चला गया। मुझे अकारण ही भय लगने लगा। जिस किसी भी बीमारी के बारे में सुन लेता तो मैं सोचने लगता था कि यह बीमारी तो मुझे हो गई। इस प्रकार रात दिन भय बना रहता था। इसी के साथ मुझे चर्म रोग व बवासीर भी हो गया, हाथों के बाल जड़ गये। कब्ज रहती थी, रात को नींद नहीं आती थी, शरीर के जोड़ों और आँखों में दर्द रहता था। इन्ही दिनों में मुझे किसी तामसिक शक्ति ने घेर लिया।

एक बार रात में, मैं और मेरा भाई छत पर सोये हुए थे तो मुझे नींद में एहसास हुआ कि सीढियों पर कोई तामसिक स्त्री है तो मैंने उसे देखने के लिए उठना चाहा लेकिन मैं उठ नहीं पाया। मैं पूर्ण रूप से चेतन अवस्था में आ गया था लेकिन न तो मैं बोल पा रहा था और न आँखें खोल पा रहा था। मैं 4-5 मिनट तक उठने व आँखें खोलने की कोशिश करता रहा लेकिन सफल नहीं हुआ फिर वह तामसिक शक्ति मेरे पलंग के पास से दौड़ती हुई निकल गई जैसे ही वह निकली, मेरी आँखें खुल गई और मैं सामान्य हो गया।

इस घटना के बाद लगभग हर महीने रात में मेरी ऐसी स्थिति हो जाती कि मेरे दोनों हाथों की अंगुलियाँ आपस में जकड़कर गर्दन के पीछे चली जाती, उस वक्त मैं नींद से जग जाता था लेकिन न तो मैं आँखें खोल पाता था और न ही कुछ बोल पाता था। हाथों को जोर से खींचता था लेकिन अँगुलियाँ नहीं खुलती थी, मैं बहुत परेशान हो जाता था। नींद पूर्ण रूप से खुल जाती थी लेकिन न तो मैं आंखें खोल पाता था और न ही कुछ बोल पाता था । 7-8 मिनट बाद अपने आप सामान्य हो जाता और आराम से आँखें खुल जाती, हाथों को सही कर लेता था। हर बार ऐसी ही स्थिति होती थी। एक बार मुझे एहसास हुआ कि एक औरत मेरे सिर की तरफ खड़ी, मुझे ऐसी अवस्था में देखकर हँस रही है। ऐसी घटना लगभग 7-8 महीनों तक होती रही।

गुरुदेव की शरण में आने के बाद ऐसी घटना एक बार भी नही हुई। 23 नवम्बर 2006 को दैनिक नवज्योति समाचार पत्र में गुरुदेव व सिद्धयोग के बारे में बताया हुआ था। मैंने पूरा अखबार पढ़ने के बाद मानस बना लिया कि मुझे गुरुदेव के शरणागत होना है। रविवार 3 दिसम्बर 2006 को कोटा में गुरुदेव का कार्यक्रम था। मैं और मेरे तीन साथी उस कार्यक्रम में सम्मलित हुए। शाम को लगभग 6 बजे गुरुदेव मंच पर पधारे। सबसे पहले मैं गुरुदेव के दर्शन करने के लिए लालायित था, जैसे ही गुरुदेव के दर्शन हुए हृदय में असीम आनन्द छा गया।

अमर ज्ञान का आनंद पाया, गगन मण्डल में नहाया।
निर्मल हुई सब काया, जद गुरु-गोविन्द को पाया।।

गुरुदेव ने पहले सिद्धयोग के बारे में बताया फिर 15 मिनट तक ध्यान करने के लिए कहा, जैसे ही ध्यान करना शुरू किया तो लोगों को अलग-अलग प्रकार की यौगिक क्रियाएँ होने लगी, मैंने सोचा कि मेरा ध्यान क्यों नहीं लग रहा है। इतने में गुरुदेव मेरे आज्ञा चक्र पर आये और मैं जोर-जोर से हँसने लगा। फिर मेरे सिर की नशें जोर जोर से हिलने लगी (क्योंकि कि मुझे मानसिक बीमारी

www.the-comforter.org

थी)। उस समय मुझे बिलकुल भी बाहर की आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। फिर मुझे प्राणायाम होने लगा और मैं पीछे की तरफ लेट गया, खेचरी मुद्रा लग गई। जैसे ही गुरुदेव ने कहा कि समय हो गया तो हडबड़ाहट के साथ उठ गया। मैं बहुत खुश था। ध्यान के बाद गुरुदेव ने कहा कि रात्रि के देवता कभी नहीं चाहते कि **सूर्योदय** हो लेकिन नियम से सूर्योदय होता है इसलिए आप ध्यान व मंत्र जाप करते रहो, आपके शरीर में प्रकाश अवश्य होगा।

घर आने के बाद प्रतिदिन ध्यान करता था। ध्यान में विभिन्न प्रकार की यौगिक होती थीं, विचित्र प्रकार का प्राणायाम होता था जिसमें प्राणायाम रुकने के बाद श्वास लेना बड़ा ही सुहावना लगता था। कभी कभी ऐसा प्राणायाम अब भी होता है। ध्यान करते हुए लगभग महीना भर हुआ कि एक दिन ध्यान में विचार आया कि ये यौगिक क्रियाएँ, मैं मेरी इच्छा से तो नहीं कर रहा हूँ तो अगले दिन से यौगिक क्रियाएँ बंद हो गई। लगभग महीने भर तक यौगिक क्रियाएँ नहीं हुई लेकिन **''इस अवधि में ध्यान के लिए जितना समय गुरुदेव से माँगता था, उतने समय बाद ही आँखें खुलती थी, एक सैकंड भी आगे-पीछे नहीं होता था।''** ध्यान में समय ऐसे निकलता था जैसे अभी तो 4-5 मिनट ही हुए हो। फिर एक दिन सुबह ध्यान में ऐसी यौगिक क्रिया हुई जिसमें शरीर तो स्थिर था केवल शरीर की त्वचा का योग हुआ, अर्थात शरीर के बालों की जड़ों का योग हुआ। ध्यान बहुत गहरा हो गया, ऐसा योग बहुत दिनों तक होता रहा, ऐसा योग होते समय शरीर पर मच्छर आदि नहीं बैठ सकते थे। **इस योग से मेरा चर्म रोग ठीक हो गया।**

किशोरावस्था से ही मेरे दांत दर्द करते थे, कभी कभी तो सुबह ऐसा लगता था जैसे सारे दांत अभी गिर जायेंगे, गुरुदेव की शरण में आने के बाद इन 13 वर्षों में एक बार भी दांत दर्द नहीं हुआ, कभी किसी एक दांत की जड़ की यौगिक क्रिया होती तो कभी सारे दांतों की जड़ों की यौगिक क्रियाएँ होती थी। मेरे कंधों में भी

विचित्र योग होता था, कंधों के अन्दर चारों ओर कुछ प्रकाश जैसा हिल्लोले लेता हुआ घूमता था। इससे कंधों का दर्द भी ठीक हो गया। मेरे दाद का काफी ईलाज करने के बाद भी ठीक नहीं हुआ था, गुरुदेव का ध्यान करने के बाद ठीक हो गया, दाद पर अपने आप चिकनाहट बनी रहती थी, सफेद पदार्थ जम जाता था।

सन् 2007 की बात है- जैसे ही मैं ध्यान में बैठता, पूरे कमरे में अँधेरा छा जाता था, केवल गुरुदेव की तस्वीर स्पष्ट दिखाई देती थी जबकि बल्ब चालू रहता था। ऐसा लगभग 3-4 महीनों तक प्रतिदिन अनुभव हुआ। इन्हीं दिनों में मुझे **अजपा** लगा, जब सुबह उठता तो अच्छी तरह महसूस होता था कि मैं तो मन्त्र को रात भर जप रहा था। दिन में यदि जप बंद हो जाता तो नाभि पर तेज खुजली होती थी, चाहकर भी नाभि पर हाथ नहीं लगा सकता था। नाम जप को तेज करने पर खुजली अपने आप शांत हो जाती थी। एक बार ध्यान में, मैं हाथों से घुटनों की मालिश करता था तो मैंने सोचा कि आजकल घुटनों का योग क्यों होता है? 5-6 दिन बाद ही मेरे घुटनों में तेज दर्द शुरू हो गया इस प्रकार रोग आने से पहले ही उसको ठीक करने के लिए योग शुरू हो गया। आनंद की पूर्ण अनुभूति होती है इसी कारण कभी-कभी ध्यान की तैयारी करते समय मुख से निकल जाता था कि यहाँ तो दुःख भोगने में भी मजा आता है। इस समय तक मैंने दीक्षा नहीं ली थी केवल **'राम नाम'** का ही जाप करता

www.the-comforter.org

था। दिनांक 03-12-2006 को रविवार था इसलिए गुरुदेव ने उस दिन दीक्षा नहीं दी थी। मैं न तो किसी गुरुभाई के सम्पर्क में आया और न ही मैंने दीक्षा लेने की कोशिश की थी, दिनांक 21-5-2009 को मैंने दीक्षा ली।

एक बार मुझे बहुत तेज बुखार आया, पूरा दिन बुखार रहा, शाम को पलंग पर सोते हुए मुझे यौगिक क्रियाएँ हुई जिसमें केवल शरीर की त्वचा का योग हुआ अर्थात शरीर के बालों की जड़ों का योग हुआ और 5 मिनट में शत प्रतिशत ठीक हो गया। जुकाम होने पर, दस्त होने पर अलग अलग प्रकार की यौगिक क्रियाएँ होती हैं।

मुझे रात को सपने में बहुत सारे सर्प दिखाई देते थे, ऐसा सपना समय समय पर आता ही रहता था। इस सम्बन्ध में एक बार गुरुदेव से प्रार्थना की तो गुरुदेव ने कहा कि तुझे डराने के लिए ही आते हैं, उस दिन के बाद आज तक एक बार भी ऐसा सपना नहीं आया। एक बार बहुत विचित्र घटना घटी-मैं रात को सोया हुआ था तो नाभि पर भार आ गया तो मुझे बहुत ही अजीब परेशानी हुई। मैं नींद में ही गुरुदेव से प्रार्थना करने लगा कि **'हे गुरुदेव !** मुझे बचाओ तो अगले ही क्षण मेरी नींद खुल गई। ऐसी ही घटना एक और रात को हुई थी, गुरुदेव से प्रार्थना करते ही नींद खुल गई, दोनों बार बिलकुल एक जैसी ही स्थिति हुई।

दिनांक 2-2-2015 से नांद सुनाई देने लग गया, ध्यान के समय नांद सुनने से सिर में झटके लगते और झटकों के साथ ही ध्यान गहरा होता जाता है। अवतरण दिवस 2016 पर गुरुदेव ने ध्यान में कहा कि चरण स्पर्श

करना हो तो गर्मियों से पहले आ जाना। दुर्भाग्य से मैं जा नहीं सका, मैंने जनवरी-फरवरी में जाने की कोशिश भी की थी लेकिन परिस्थितियों वश जा नहीं सका। 5 जून 2017 को गुरुदेव देवलोक हो गए।

आनंद, खेचरी मुद्रा, नांद सुनना, अजपा आदि रहस्यमय शब्दों को केवल गुरु कृपा से स्वयं अनुभव करके ही समझा जा सकता है, समझाने पर इनको कोई रत्ती भर भी नहीं समझ सकता है। यह रास्ता तो गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास और समर्पण का है, साधक को तो ध्यान और मंत्र जाप करना है। भगवान् श्री कृष्ण ने कहा कि न कोई मेरा मित्र है और न कोई मेरा शत्रु, जो मुझे जैसे भजता है मैं भी उसे वैसे ही भजता हूँ।

कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए जोधपुर आश्रम के बारे में भ्रम फैलाते हैं। अतः ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए। स्वयं सद्गुरुदेव सियाग द्वारा स्थापित आश्रम के दिशा निर्देशों के अनुसार ही मर्यादा में रहकर ही इस दर्शन को विश्व दर्शन बनाने में अपना सहयोग देना चाहिए। क्योंकि योग में अनुशासन का बड़ा महत्त्व है। गुरुदेव ने अपने प्रवचन में कई बार महर्षि पतंजलि योग का नाम लिया है। पतंजलि कृत योगदर्शन की पुस्तक के 195 सूत्रों में सबसे पहला सूत्र है-अथ योगानुशासनम् अर्थात् योग में अनुशासन अत्यावश्यक है। गुरुदेव से प्रार्थना है कि यह दर्शन सम्पूर्ण विश्व में फैल जाये ताकि मानव जाति का कल्याण हो।

-मुकेश चौधरी
पुत्र श्री रामकरण चौधरी
ग्राम-करांटी, पं.स.-भिनाय
जिला-अजमेर (राज)

हे परम प्रभो ! "शाश्वत सत्य"
हम केवल 'तेरी' ही 'आज्ञा' का पालन करें
और 'तेरे' सत्य के अनुसार ही जियें।

श्रीमां (श्री अरविन्द आश्रम)

www.the-comforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा बाड़मेर द्वारा श्री गंगाई नगर व बाड़मेर आश्रम में बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) के बरसी पर्व पर पूजा अर्चना कर, साधकों ने ध्यान किया। (22 दिसम्बर 2019) 15 अक्टूबर 1998 को बाड़मेर के मालियों के वास का नामरकण बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी के नाम पर **श्री गंगाई नगर** रखा गया था।

सूरत (गुजरात) के साधकों द्वारा बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) के बरसी पर्व पर पूजा अर्चना कर ध्यान किया गया। (22 दिसम्बर 2019)

गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर) के साधकों द्वारा बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) के बरसी पर्व पर पूजा अर्चना कर ध्यान किया गया। (22 दिसम्बर 2019)

www.the-comforter.org

मुम्बई के साधकों द्वारा बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) के बरसी पर्व पर पूजा अर्चना कर ध्यान किया गया। (22 दिसम्बर 2019)

आश्विनी अस्पताल (मुम्बई) में प्रत्येक रविवार को आयोजित सिद्धयोग शिविरों में ध्यान मग्न साधक।

ध्यान योग केन्द्र, खड़िया (कोटा) के साधकों द्वारा बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) के बरसी पर्व पर पूजा अर्चना कर ध्यान किया गया। (22 दिसम्बर 2019)

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग से सफल और स्वस्थ जीवन की ओर

मोतियाबिंद और मानसिक तनाव से मुक्ति

सर्वप्रथम मैं भारत भाग्य विधाता, दसवें अवतार श्री कल्कि भगवान् समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग एवं शिव अवतारी बाबा श्री गंगाईनाथजी महायोगी (ब्रह्मलीन) के पावन श्री चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ।

मेरा नाम बाबूलाल देवासी है। मेरे पिताजी भेड़पालन का कार्य करते हैं। मैंने समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के पावन सानिध्य में गुरु पूर्णिमा-19 जुलाई 2016 को दीक्षा ली थी।

मैं गुरु पूर्णिमा के दिन ही अद्भुत आनन्द में डूब गया था। आज भी वह दिव्य पल मेरे भीतर के भावों में जीवित है। दीक्षा से पूर्व मेरी दोनों आँखों में मोतियाबिन्द की भयंकर तकलीफ थी। पढ़ाई करने में मुझे बहुत परेशानी थी। पहले मेरी स्थिति ऐसी हो गई थी कि सत्र 2013 में 12वीं पास करने के पश्चात् बीच में एक साल मेरी नियमित पढ़ाई करने का क्रम टूट गया था। जीवन नारकीय बन गया। आज मैं पूजनीय गुरुदेव जी की असीम कृपा से एकदम स्वस्थ हूँ एवं दिव्य जीवन जी रहा हूँ। वर्तमान में शेखावटी क्षेत्र की धरती से बी.एड. द्वितीय वर्ष का सहपाठी हूँ। मेरे प्रथम वर्ष में 78.90 प्रतिशत बने। मुझे जो भी मान सम्मान मिल रहा है, मैं गुरुदेव जी के श्री चरणों में अर्पित करता हूँ।

मेरी बी.एड. द्वितीय वर्ष की इंटरशिप, अपने पैतृक गाँव भाकरीवाला में ही चल रही है। वर्तमान में, मैं अपने गाँव के पास ही सागर की ढ़ाणी में, गृह शिक्षक के रूप में सेवाएँ दे रहा हूँ। गुरु कृपा से ही मुझमें मंच संचालन की योग्यता विकसित हुई अन्यथा मैं तो बहुत ही शंकालू प्रवृत्ति का व्यक्ति था।

मुझे सबसे पहले गुरुदेव से दीक्षा दिलाने वाले मेरे दिग्गज गुरुभाई श्री जगदीश जी देवासी को आन्तरिक भावों से धन्यवाद देता हूँ। इन्होंने ही मेरा किराया वहन करके सर्वप्रथम मुझे अपने साथ लेकर सूर्यनगरी जोधपुर में श्री कल्कि भगवान् के दर्शन करवाने का बीड़ा उठाया था। उस दिन मुझे सत्पथ मिल गया। जब गुरु कृपा होती है तो घर बैठे ही सद्ज्ञान मिल जाता है। मुझ पर भी ऐसे ही सद्गुरु भगवान की कृपा बरसी है। वर्तमान में मुझे गुरुकृपा से किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं है। समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की अमर तस्वीर से 15 मिनट नियमित ध्यान एवं हर समय संजीसनी मंत्र जपने से तत्काल लाभ ही लाभ मिल रहा है।

मैं विश्वभर के सभी जाति-धर्म के सकारात्मक भाई और बहनों को कहना चाहूँगा कि आप दुनिया में किसी भी जगह या किसी भी समय में गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की वेबसाइट-**www.the-comforter.org** सर्च करके गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के फोटो एवं गुरुदेव की आवाज में दिव्य मंत्र सुनकर 15 मिनट ध्यान करके सच्चाई जानें।

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग से उत्तम जीवन जीने का पथ मिला है। मैं सद्गुरुदेव के चरण कमलों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ।

www.the-comforter.org

कभी-कभी सपने संजोने में वर्षों बीत जाते हैं,

कभी किसी से नजरें मिलाने में जमाने बीत जाते हैं।

मैंने आँखें खोली तो समर्थ गुरुदेव की गोद में पाया है।

-बाबुलाल देवासी
सुपुत्रश्री घेवरराम देवासी
गाँव-भाकरीवाला,
जिला-पाली (राज.)

मानसिक तनाव से मुक्ति

15 अप्रेल 2007 में गुरुदेव की तस्वीर से जमवा रामगढ़ (जयपुर) में कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

गुरुदेव के पेपर की भक्ति, पेपर को नमन्।
दुःख-दर्दों से मुक्ति, हुआ गगन में मगन।।

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग का अद्भुत विज्ञान-भारतीय योग दर्शन और अन्य कुछ भी जानकारी नहीं। उस समय गुरुदेव की तस्वीर से ध्यान कराकर, पेपर बाँट दिये जाते थे। एक अद्भुत कमाल और विश्व विज्ञान के लिए शौध का विषय है कि न तो गुरुदेव का फोटो, न ही मंत्र और नहीं किसी भी प्रकार की अन्य जानकारी। एक साधारण पेपर पर छपे गुरुदेव के फोटो ने जीवन बदल दिया। नारकीय जीवन, आनंदमय बना दिया।

मैं रामजीलाल गुर्जर, जयपुर की जमवारामगढ़ तहसील से बोल रहा हूँ। गुरुदेव की मुझ पर असीम कृपा है। मैं सन् 2007 से लगातार गुरु महाराज को याद कर रहा हूँ। सुबह शाम जब उनको याद करता हूँ तो करंट का झटका सा सिर पर लगता है।

2007 में जोधपुर आश्रम से प्रचार -प्रसार के लिए एक टीम आई हुई थी और भाखरी पर मोनी वाले हनुमान जी के मंदिर प्रागण में कार्यक्रम आयोजित हुआ था। गाड़ी पर माइक की आवाज सुनकर मैं मंदिर में गया था। मैं बहुत दुःखी रहता था। मैं मानसिक रूप से विकृत था। जीवन में दुःख ही दुःख था। गुरु महाराज की फोटो पर शाम के समय ध्यान करवाया गया था।

मुझे एक पेपर मिला था, उसमें गुरु महाराज का फोटो और ध्यान की विधि लिखी हुई थी। मैंने उस पेपर की तस्वीर बना दी और पिछले 12 साल से उस पेपर की तस्वीर से ध्यान कर रहा हूँ। मुझे बहुत आनंद आता है। मेरे पास कोई शब्द तो नहीं पर मुझे बहुत आनंद आता है। मैं मानसिक तनाव से पूर्ण मुक्त हूँ। और जब भी गुरु महाराज की तस्वीर के सामने आँख बंद कर बैठता हूँ तो गहरे ध्यान में चला जाता हूँ। मुझे कोई भान ही नहीं रहता कि मैं कहाँ हूँ? कई बार तस्वीर के सामने बैठने पर सिर में जोर का झटका लगता है, उससे मुझे आनंद की अनुभूति होती है।

मेरे पर गुरु महाराज की बहुत मेहरबानी हुई है। मैंने कई बार जोधपुर जाकर गुरु महाराज के दर्शन करने की मन में ठानी लेकिन नहीं जा सका। फिर मुझे बाद में पता चला कि गुरु महाराज अब भौतिक शरीर में नहीं है तो मुझे बहुत दुःख हुआ लेकिन अब क्या हो सकता है? अब मैं पिछले कई दिनों से मन में विचार कर रहा था कि मैं जोधपुर आश्रम पर बात करूं ! पेपर में कई मोबाइल नं. दे रखे थे लेकिन कई बंद थे तो कोई लग नहीं रहा था। आखिर गुरुदेव के आश्रम के एक नंबर पर कॉल लग ही गया। आज मेरी पहली बार गुरुदेव के आश्रम में बात हुई है। मैं बहुत खुश और आनंदमय हूँ। मुझे गुरु महाराज का फोटो भेजना ताकि मैं घर पर उनके अच्छे से दर्शन कर सकूं।

गुरु महाराज की कृपा से सब दुःख -दर्द दूर हो गये।

फोन पर हुई बातचीत के आधार पर

-श्री रामजीलाल गुर्जर-47 वर्ष
जमवा रामगढ़ (जयपुर)

www.the-comforter.org

एकजुट होकर सनातन धर्म की जय जयकार से गूँजेगा आकाश मण्डल

"ये एक विकास है, जो होना है। इसमें पूरे देश को सहयोग देना है; एक आदमी का काम नहीं है। इस धर्म को, इस दर्शन को मानने वाले सभी लोग एक जुट से आवाज लेकर अगर जय जयकार करेंगे-वैदिक दर्शन की, हिन्दू दर्शन की तो गूँज जाएगा पूरा आकाश मण्डल। मुझमें जो विकास हो गया है, वो सबमें हो सकता है।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग, हाड़ौती क्षेत्र कोटा आश्रम का शिलान्यास कार्यक्रम -13 मई 2007

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के आधार

महर्षि श्री अरविन्द

कठिनाई में

अगर तुम इस प्रकार अलग हट जाओ तो ऊपरी सतह के संघर्ष के पीछे, अपने अंदर ही एक ऐसी प्रशांत स्थिति प्राप्त करना भी तुम्हारे लिये अधिक आसान हो जाएगा, जहाँ से तुम अपनी मुक्ति के लिये कहीं अधिक असफलता के साथ भागवत सहायता का आह्वान् कर सकोगे। भागवत उपस्थिति, स्थिरता, शांति, शुद्धि, ज्योति, प्रसन्नता और प्रसारता तुम्हारे ऊपर विद्यमान है और तुम्हारे अंदर अवतरित होने के लिये प्रतीक्षा कर रही हैं। इस पीछे की प्रशांत स्थिति को प्राप्त करो और फिर तुम्हारा मन भी पहले से अधिक प्रशांत हो जाएगा और प्रशांत मन के द्वारा तुम सबसे पहले शुद्धि और शांति का और फिर उसके बाद भागवत शक्ति का आह्वान् कर सकोगे। अगर तुम इस शांति और शुद्धि को अपने अंदर अवतरित होते हुए अनुभव कर सको तो फिर तुम उनका तब तक बार-बार आह्वान् कर सकते हो जब तक वे तुम्हारे अंदर प्रतिष्ठित होना आरंभ न कर दें; उस समय तुम यह भी अनुभव करोगे कि इन वृत्तियों को परिवर्तित करने तथा तुम्हारी चेतना को रूपांतरित करने के लिए भागवत शक्ति तुम्हारे अंदर क्रिया कर रही है। उसकी इस क्रिया के अंदर तुम शक्ति की उपस्थिति और शक्ति के विषय में भी सचेतन हो जाओगे। जब एक बार यह हो जाता है तब बाकी सब चीजें समय पर तथा तुम्हारे अंदर होनेवाले तुम्हारी यथार्थ और दिव्य प्रकृति के क्रम-विकास पर निर्भर करती है।

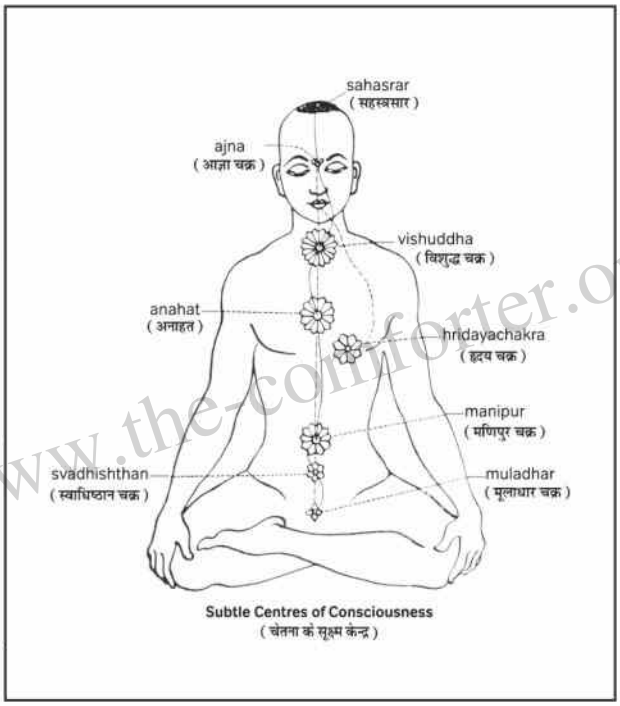

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

www.the-comforter.org

अपूर्णताओं का होना, यहाँ तक बहुत अधिक और भयानक अपूर्णताओं का होना भी, योगसाधना की उन्नति में स्थायी रूप में बाधक नहीं हो सकता। (मैं यहाँ यह नहीं कहता कि पहले जो उद्घाटन हो चुका है, वह फिर से प्राप्त होगा, क्योंकि मेरा अनुभव तो यह बतलाता है कि प्रतिरोध और संघर्ष का काल निकल जाने पर साधारणतः एक नवीन और बृहत्तर उद्घाटन होता है, एक विशालतर चेतना प्राप्त होती है तथा पहले जो कुछ प्राप्त किया गया था, पर जो उस समय खो गया मालूम होता था-किंतु केवल मालूम ही होता था-उससे भी साधक आगे बढ़ जाता है।) एकमात्र वस्तु जो स्थायी रूप से बाधक हो सकती है-परंतु उसका भी होना आवश्यक नहीं है, कारण उसे भी परिवर्तित किया जा सकता है-वह है मिथ्याचार, सच्चाई का अभाव, और वह तुममें नहीं है। अगर अपूर्णता बाधक होती तो कोई भी मनुष्य योग में सफलता न प्राप्त कर सकता; कारण सब मनुष्य ही अपूर्ण है; और मैंने जो कुछ देखा है उसके आधार पर मैं यह निःसंदेह होकर नहीं कह सकता कि जिनमें योग की बड़ी से बड़ी योग्यता होती है, प्रायः उन्हीं में बड़ी से बड़ी अपूर्णताएँ नहीं होती अथवा किसी समय नहीं रही होतीं। संभवतः तुम जानते ही हो कि सुकरात ने अपने चरित्र पर क्या टिप्पणी की थी; ठीक यही बात बहुत से बड़े बड़े योगी अपनी आरंभिक मानव प्रकृति के विषय में कह सकते हैं।

❖❖❖

भारतीय योगदर्शन का मूल उद्देश्य मोक्ष है, रोग है ही नहीं !

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

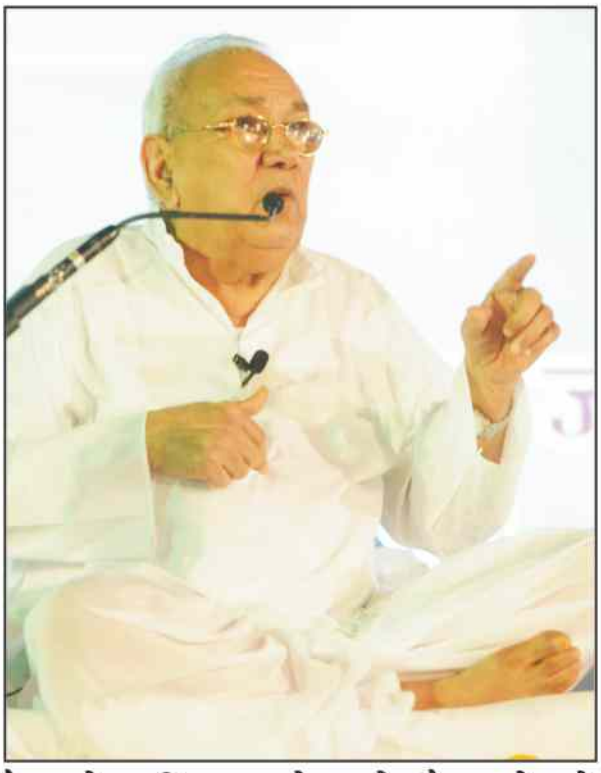

मैं जिस **दिव्य विज्ञान** के प्रसार-प्रचार के लिए निकला हूँ, विश्व उसे अभी पूर्व-पश्चिम के मेल की संज्ञा दे रहा है। क्योंकि मानव जाति का विकास इसी स्तर तक हुआ है। परन्तु **भारतीय दर्शन आकाश और पृथ्वी के मिलन की बात करता है**। पश्चिमी संस्कृति को इस दिव्य ज्ञान की जानकारी बिलकुल भी नहीं है।

भारतीय योगदर्शन का मूल उद्देश्य मोक्ष है। परन्तु आज, सम्पूर्ण संसार में योग का उद्देश्य मात्र रोग मुक्ति रह गया है। रोग नित्य नये-नये पैदा हो रहे हैं। क्योंकि भारतीय संस्कृति योग पर एकाधिकार माँगती है और रखती भी है। परन्तु मानवता में उसे मूर्तरूप नहीं दे पा रही है। केवल **शारीरिक कसरत** को ही **योग** की संज्ञा दे रहे हैं। इसके विरोध को, पश्चिम की साजिश कह कर अपना बचाव करने का प्रयास कर रहे हैं। अपना बचाव कर पाएँगे, संभव नहीं लगता।

14.6.2006, ए.वी.एस.के.जोधपुर

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

दूसरे दिन प्रात:काल सूर्य ने क्षितिज पर अभी झाँकना आरम्भ ही किया था कि मैं मास्टर महाशय के घर पहुँच गया। हृदयविदारक स्मृतियों से जुड़े उस घर की सीढ़ियाँ चढ़ कर मैं चौथी मंजिल पर उनके कमरे के सामने पहूँच गया। बन्द दरवाजे की मूठ पर एक कपड़ा लिपटा हुआ था जो शायद इस बात का संकेत था कि वे एकान्त चाहते हैं। मैं दरवाजे के सामने दुविधा में खड़ा था कि इतने में मास्टर महाशय ने स्वयं ही दरवाजा खोल दिया। मैंने उनके पूज्य चरणकमलों में प्रणाम किया।

दिव्य उल्लास को छिपाते हुए मैंने विनोद भाव में अपना मुख गम्भीर बना लिया।

''महाशय, आपके सन्देश के लिये मैं आ गया हूँ... मैं मानता हूँ कि अति भोर में ही आ गया हूँ ! क्या प्रिय जगजननी ने मेरे विषय में कुछ कहा ?''

''नटखट छोटे महाशय !''

इसके अतिरिक्त उन्होंने कुछ भी नहीं कहा। स्पष्ट था कि मेरी गम्भीरता का नाटक प्रभावी नहीं था।

''इतनी गूढता, इतना छल क्यों ? क्या सन्त कभी सीधी बात करते ?'' मैं शायद थोड़ा चिढ़ गया था।

''क्या मेरी परीक्षा लेना अनिवार्य है ?''उनकी शांत आँखें समझदारी और विवेक से भरपूर थीं। ''कल रात को 10 बजे स्वयं दिव्यरूपा जगन् तुम्हें जो आश्वासन दिया, उसके बाद भी अब मेरे लिये कहने को कुछ बचा है ?''

मेरी आत्मा की खिडकियों को खोलने की कुंजी मास्टर महाशय के पास थी; मैंने पुन: उनके चरणों में साष्टांग प्रणिपात किया। परन्तु इस बार मेरे जो अश्रु बह रहे थे वे अतीव हर्ष के थे, दु:ख के नहीं। ''क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारी भक्ति ने माता की अनंत करुणा को नहीं छुआ है ? ईश्वर का मातृभाव, जिसे तुमने मानवी और दैवी रूपों में पूजा है तुम्हारी आर्त पुकार का उत्तर दिये बिना कदापि नहीं रह सकता।''

ये सीधे-सादे सन्त कौन थे, जिनका परमसत्ता से किया गया छोटे से छोटा अनुरोध भी मधुर स्वीकृति पा जाता था ? इस संसार के जीवन में उनकी भूमिका अत्यंत साधारण थी, जो मेरी दृष्टि में विनम्रता के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति के अनुरूप थी। एमहर्स्ट स्ट्रीट के इस घर में मास्टर महाशय लड़कों के लिये एक छोटा सा हाईस्कूल चलाते थे। उनके मुँह से कभी डाँट-फटकार का कोई शब्द नहीं निकलता था। उनका अनुशासन किसी नियम या छड़ी की वजह से नहीं था। इन सादगीयुक्त कक्षाओं में सच्चा उच्चतर गणित सिखाया जाता था, और सिखाया जाता था प्रेम का रसायन शास्त्र जिसका पाठ्यपुस्तकों में कभी कोई उल्लेख भी नहीं मिल सकता।

अगम्य प्रतीत होने वाले नीरस उपदेशों की अपेक्षा आध्यात्मिक संसर्ग के द्वारा ही वे अपने ज्ञान का प्रसार करते थे। जगज्जननी के विशुद्ध प्रेम में वे इतने चूर रहते थे कि मान-अपमान की बाह्य औपचारिकताओं की ओर उनका कोई ध्यान ही नहीं रहता था।

''मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ; तुम्हारे गुरु थोड़े समय बाद आयेंगे,'' उन्होंने मुझसे कहा। ''उनके मार्गदर्शन में प्रेम और भक्ति के रूप में तुम्हें मिली ईश्वर की अनुभूतियाँ उनके अगाध ज्ञान की अनुभतियों में रूपांतरित हो जायेंगी।''

प्रतिदिन दोपहर ढलते-ढलते मैं एमहर्स्ट स्ट्रीट में उनके घर पहुँच जाता। मुझे मास्टर महाशय के उस दिव्य चषक की चाह रहती थी, जो इतना लबालब भरा हुआ था कि उसकी बूँदें प्रतिदिन मेरे ऊपर छलकती थीं। पहले कभी भी इतने भक्तिभाव से मैं नतमस्तक नहीं हुआ था; अब तो मास्टर महाशय के चरणस्पर्श से पुनीत हुई भूमि पर केवल चलने का अवसर मिलने को भी मैं अपना सौभाग्य मानने लगा।

''महाशय ! कृपया इस चंपकमाला को धारण कीजिये। मैंने यह खास आपके लिये बनायी है।'' एक दिन शाम को मैं अपनी पुष्पमाला हाथ में लिये उनके घर पहुँच गया। परन्तु बार-बार इस सम्मान को अस्वीकार करते हुए वे पीछे हट गये। मेरे दु:ख का अनुभव करते हुए अन्तत: उन्होंने मुस्कराते हुए उसे स्वीकार कर लिया।''

❖❖❖

www.the-comforter.org

भारत की स्थिति

जब तक सरकार में बैठे लोग धार्मिक और चरित्रवान् नहीं होंगे, देश का उत्थान असंभव है।

आज भारत में जितनी तामसिकता है, उतनी किसी युग में नहीं रही। आज देश में जितना अविश्वास है, उतना पहले कभी नहीं रहा। आज देश का हर व्यक्ति एक-दूसरे को ठगने का प्रयास कर रहा है।

कोई समझ नहीं पा रहा है, देश किस दिशा में आगे बढ़ रहा है। ईश्वर पर सही अर्थों में किसी का विश्वास रहा ही नहीं। हर व्यक्ति भविष्य के बारे में सर्वाधिक चिन्तित है। सभी लोग लोभ, लालच के वशीभूत होकर येनकेन प्रकारेण धन संग्रह में लगे हैं। ऐसे लोगों की संख्या देश में बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। **देश का आधे से ज्यादा धन, इस वृत्ति के लोगों के पास अनधिकृत रूप से काले धन के रूप में जमा किया हुआ पड़ा है।** एक तरफ लोगों को खाने-पीने की मूलभूत जरूरत पूरी करने के लिए धन नहीं मिल रहा है, दूसरी तरफ खर्च करने को कोई जगह नहीं है। **जब तक सरकार में बैठे लोग धार्मिक और चरित्रवान् नहीं होंगे, देश का उत्थान असंभव है।**

मैं देख रहा हूँ, ऐसी वृत्ति के लोगों का पतन प्रारम्भ हो चुका है, सबसे खुशी की बात तो यह है कि इस बार यह कार्य ऊपर से प्रारम्भ हुआ है, अतः नीचे तक फैलने में अधिक देर नहीं लगेगी। किसी हद तक यह परिवर्तन नीचे तक पहुँच चुका है, यह बहुत ही शुभ लक्षण है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
10.10.1997,बीकानेर

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के बारे में

अगर हम इससे आगे न भी जा सकें तो भी हम एक बहुत बड़ा कदम आगे बढ़ा चुके होंगे क्योंकि अभी तक हम उस चीज को कल्पना पा चुके हैं जिसे हम प्रकृति कहते हैं, जिसका एक महान् **इच्छा-शक्ति** पर अधिकार है, या जिसमें वह इच्छा-शक्ति है या जो उससे अभिन्न है, जो एक विशाल लक्ष्य और लाखों जटिल रूप से संबद्ध आनुषंगिक लक्ष्यों को अपने सामने रखे हुए, उन्हें आविष्कार, अनुकूलन, व्यवस्था, मुक्ति द्वारा संपादित करती हुई, अमोघ विवेक का उपयोग करके अपने जटिल कार्य को सुविस्तृत ढंग से परिपूर्ण करती है। मानव बुद्धि इस महान् शक्ति की एक सीमित और घटिया क्रिया है जिसे प्रकृति राह दिखाती और अपने काम में लाती है और जब वह उसके लक्ष्यों के विरुद्ध लड़ती हुई प्रतीत होती है तब भी उसका काम पूरा करती है।

हम कह सकते हैं कि ऐसी शक्ति में बुद्धि नहीं है क्योंकि उसमें मानसिक चेतना के लक्षण नहीं दिखलायी देते और वह अपने काम के हर अंश में मानव या मानसिक बुद्धि का उपयोग नहीं करती। लेकिन हमारी आपत्ति केवल एक अतीन्द्रिय भेद है। अगर हम व्यावहारिक रूप से जीवन पर नजर डालें, उसके सूक्ष्म विचार पर नहीं, और अगर हम इस कल्पना को मान लें, इसपर विश्वास करें तो देखेंगे कि इस बुद्धिहीन विवेक की क्रिया वही होती जो वैश्व बुद्धि की होती। इस यांत्रिक इच्छा के लक्ष्य और साधन भी वही लक्ष्य और साधन होते जिन्हें सर्वशक्तिमान प्रज्ञा चुनती है। लेकिन अगर हम निश्चिति पर आ पहुँचे तो क्या स्वयं तर्क बुद्धि हमसे यह माँग नहीं करती कि हमें प्रकृति में या उसके पीछे वैश्व बुद्धि या सर्वशक्तिमान प्रज्ञा को स्वीकारना चाहिये ? अगर परिणाम ऐसे हैं जिन्हें ये शक्तियाँ ला सकती हैं तो क्या हमें कारण के रूप में इन शक्तियों की उपस्थिति को स्वीकार न करना चाहिये ?

सच्ची तर्कबुद्धि कौन-सी है, यह स्वीकार करना कि बुद्धि के काम बुद्धि द्वारा ही होते हैं या यह आग्रह करना कि वे निश्चेतन रूप से पूर्णता को क्रियान्वित करती हुई अंधी मशीन से आते हैं, यह स्वीकार करना कि मानवता के अंदर प्रत्यक्ष बुद्धि का आविर्भाव विश्व की एक गुप्त बुद्धि के विशिष्ट कार्य के कारण है या यह दावा करना कि यह एक ऐसी शक्ति की उपज है जिसमें बुद्धि का तत्व सर्वथा अनुपस्थित है इस विरोधाभास को यह कहकर न्यायसंगत ठहराना कि चीजें विशेष ढंग से क्रियान्वित होती हैं क्योंकि इस तरह से क्रियान्वित होना ही उनकी प्रकृति है, यह तो बुद्धि के साथ खिलवाड़ करना होगा क्योंकि यह हमें इस निरे तथ्य से एक इंच भी आगे नहीं ले जाता कि चीजें ऐसे ही क्रियान्वित होती हैं, क्यों ? पता नहीं।

प्रकृति में बुद्धि और प्रज्ञा है या प्रकृति ही बुद्धि और प्रज्ञा है यह मानने में आधुनिक मनुष्य की आनाकानी का सच्चा कारण यह है कि मनुष्य के मन में इन चीजों का मानसकि रूप से आत्म-सचेतन व्यक्तित्व के साथ स्थिर संबंध बना है। हम सोचते हैं कि बुद्धि पहल से ही एक ऐसे व्यक्ति को मान लेती है जो बुद्धिमान् हो, एक ऐसे अहंकार को जिसके पास बुद्धि हो और वह उसका उपयोग भी करता हो। मानव चेतना की परीक्षा से पता चलता है कि यह **विचार-साहचर्य** एक भ्रांति है। बुद्धि हमें अपने अधिकार में रखती है, हम बुद्धि पर अधिकार नहीं रखते। बुद्धि हमारा उपयोग करती है, हम बुद्धि का उपयोग नहीं करते।

मनुष्य में मानसिक अहंकार बुद्धि की सृष्टि और यंत्र है और स्वयं बुद्धि प्रकृति की एक शक्ति है जो समस्त पशु जीवन में प्रारंभिक या उन्नत स्थिति में अपने-आपको प्रकट करती है। इसलिये यह आपत्ति गायब हो जाती है। इतना ही नहीं, स्वयं विज्ञान ने अहंकार को मन की उपज कहकर अपने ठीक स्थान पर रखा दिया है और दिखलाया है कि बुद्धि मनुष्य की संपत्ति न होकर प्रकृति की एक शक्ति है और इस कारण प्रकृति का एक गुण, वैश्व शक्ति की एक अभिव्यक्ति है।

अब प्रश्न रहता है कि क्या वह एक मौलिक और सर्वव्यापक गुण है या केवल प्रकृति के चुने हुए छोटे से भाग में अभिव्यक्त विकास है। यहाँ फिर यह कठिनाई है कि हम बुद्धि को संगठित मानसिक चेतना के साथ जोड़ देते हैं। चलो, विज्ञान जिन तथ्यों को हमारी ज्ञान-सीमा में ले आया है, उन्हें देखें और उनके बारे में खोज करें। हम उनमें से एक पर ही नजर डालेंगे, वह है अमरीका का मक्खियाँ पकड़नेवाला पौधा। यह एक वानस्पतिक जीव है जिसे भूख लगती है, हम इसे असचेतन भूख कह सकते हैं।

संदर्भ-'मानव से अतिमानव ' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

बाबा श्री गंगाईनाथ जी बरसी पर्व समाचारों की सुर्खियों में

गंगाईनाथ का चित्र पूजन किया

कोटा। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र सीन्ता में रविवार को बाबा गंगाईनाथ का 36वां बरसी महोत्सव सुबह 11 बजे मनाया गया। कार्यक्रम में बाबा गंगाईनाथ की तस्वीर की पूजा की गई। प्रवक्ता राजेश गौतम, हरकचन्द शर्मा, राकेश खण्डेलवाल ने पूजा-अर्चना एवं आरती की गई। उपस्थित श्रद्धालुओं को मंत्रजाप, ध्यान विधि बताई।

गंगाईनाथ जी की बरसी 22 को

कोटा 20 दिसम्बर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा के तत्वावधान मे ब्रह्मलीन बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी का 36वाँ बरसी महोत्सव दिनांक 22 दिसम्बर रविवार को प्रातः 11:00 बजे माइल स्टोन रेजीडेन्सी कोटा के पास केनाल रोड सीन्ता स्थित आश्रम में मनाया जायेगा। कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौत्तम ने बताया कि ब्रह्मलीन बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी नाथ सम्प्रदाय के बारह पंथो मे से एक पंथ आईपंथी नाथ थे। नवआगन्तुक एवं जिज्ञासु लोगो को शक्तिपात दीक्षा भी दी जायेगी। इसी प्रकार देश-विदेश एवं जोधपुर मुख्यालय स्थित आश्रम मे भी बरसी महोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया जायेगा, वहाँ पर पूजा-अर्चना संस्था के अध्यक्ष राजेन्द्र सियाग करेगें।

दैनिक पैंतरा

बाबा गंगाई नाथ का बरसी महोत्सव संपन्न

श्रद्धालुओं ने किया संजीवनी मंत्र का जाप व सामूहिक ध्यान

कोटा 22 दिसम्बर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा द्वारा ब्रह्मलीन बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी का 36वाँ बरसी महोत्सव 22 दिसम्बर रविवार प्रातः 11:00 बजे माइल स्टोन रेजीडेन्सी कोटा केनाल रोड सीन्ता स्थित आश्रम मे श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौत्तम ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारम्भ मे बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी की तस्वीर की पूजा अर्चना कर स्थापित किया गया इसके पश्चात बाबा श्री गंगाईनाथ जी के शिष्य एवं सर्व सदगुरूदेव संत श्री रामलाल सियाग की चरण पादुकाओं का पूजन कर उनके लैकडो शिष्यों की उपस्थिति मे कोषाध्यक्ष राजेश गौत्तम, हरकचन्द जी शर्मा एवं राकेश खण्डेलवाल द्वारा पूजा-अर्चना एवं आरती की गई।

आरती के पश्चात् उपस्थित श्रद्धालुओ ने गुरू-शिष्य परम्परा के अनुसार प्राप्त संजीवनी मंत्र के जाप के साथ सामूहिक ध्यान किया। ध्यान के दौरान साधको को ऑटोमेटिक यौगिक मुवमेन्ट होने लगे। ध्यान की विधि बताई। ध्यान के कार्यक्रम के पश्चात् श्रद्धालुओ ने कतार मे लगकर श्रद्धापूर्वक अपने आध्यात्मिक गुरू एवं उनके गुरू बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी को पुष्पहार आदि भेंट कर चरण वन्दना की। इस अवसर पर कोटा शाखा कार्यकारिणी के सुरेश जी गोयनी, दिलीप पुरसवानी, कृष्ण सुन्दर नागा, श्याम शर्मा, राजेन्द्र शर्मा, दीपक खुबचन्दानी, राजु नागा, तपोधन वाघौच, मुकेश कुमार आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

तपस्वीय वैदिक दर्शन मे सिद्धयोग द्वारा स्वतः यौगिक मूवमेन्ट होना विज्ञान के लिये आश्चर्यजनक है और विश्वभर के लोग अचम्भित है। इस संबंध मे समर्थ संत रामलाल सियाग का कहना है कि यह महर्षि पातंजलि का अष्टांग योग है एवं भारतीय वेदो मे वर्णित वेदरूपी कल्पतरू का अमर फल है जो मेरे माध्यम से मानवता मे मूर्तरूप ले रहा है।

इसी प्रकार देश-विदेश एवं जोधपुर मुख्यालय स्थित आश्रम मे भी बरसी महोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया गया, जोधपुर मुख्यालय पर पूजा-अर्चना संस्था के अध्यक्ष राजेन्द्र सियाग ने की।

बाबा गंगाईनाथ महायोगी का बरसी महोत्सव आज

कोटा 21 दिसम्बर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा के तत्वावधान में ब्रह्मलीन बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी की 36 वां बरसी महोत्सव 22 दिसम्बर रविवार को प्रातः 11 बजे माइल स्टोन रेजीडेन्सी कोटा के पास केनाल रोड सीन्ता स्थित आश्रम में श्रद्धापूर्वक मनाया जायेगा।

कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि, ब्रह्मलीन बाबा श्री गंगाईनाथ महायोगी बनने के लिये कुण्डलिनी महाविज्ञान के संत रामलाल सियाग की रहस्यमय तरीके से समाधि लेने के दो दिन पश्चात अपनी अहेतुक समस्त आध्यात्मिक शक्तियों सहित गुरूपद सौंप पर कोटा,बूंदी, बारां, झालावाड़ सहित सम्पूर्ण आए हजारों साधक सामूहिक रूप से ध्यान करें परम्परा के अनुसार पूजा अर्चना एवं सामूहिक मं भी होगा तथा इसके साथ ही नवआगन्तुक एवं शक्तिपात दीक्षा भी दी जायेगी।

इसी प्रकार देश विदेश एवं जोधपुर मुख्याल भी बरसी महोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया जायेगा। संस्था के अध्यक्ष राजेन्द्र सियाग करेंगे।

बाबा गंगाईनाथ महायोगी का बरसी महोत्सव मनाया

संदेश न्यूज। कोटा. अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर शाखा कोटा की ओर से ब्रह्मलीन बाबा गंगाईनाथ महायोगी का 36वां बरसी महोत्सव 22 दिसम्बर को केनाल रोड सीन्ता स्थित आश्रम में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारम्भ मे बाबा गंगाईनाथ की तस्वीर की पूजा-अर्चना कर स्थापित किया गया। इसके बाद बाबा गंगाईनाथ के शिष्य एवं समर्थ संत रामलाल सियाग की चरण पादुकाओं का प्रक्षालन कर उनके सैकड़ों शिष्यों की उपस्थिति में पूजा-अर्चना एवं आरती की गई। आरती के बाद उपस्थित श्रद्धालुओं ने गुरु-शिष्य परम्परा के अनुसार प्राप्त संजीवनी मंत्र के जाप के साथ सामूहिक ध्यान किया। ध्यान के दौरान साधकों को ऑटोमेटिक यौगिक मूवमेंट होने लगे। भारतीय वैदिक दर्शन में सिद्धयोग द्वारा स्वतः यौगिक मूवमेंट होना विज्ञान के लिए आश्चर्यजनक है और विश्वभर के लोग अचम्भित है। इस संबंध में समर्थ संत रामलाल सियाग का कहना है कि यह महर्षि पातंजलि का अष्टांग योग है एवं भारतीय वेदो मे वर्णित वेदरूपी कल्पतरू का अमर फल है, जो मेरे माध्यम से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

कार्यक्रम का संचालन खुशहाल बाबा ने किया। इन्होंने उपस्थित श्रद्धालुओं को मंत्रजाप एवं ध्यान की विधि बताई। इस अवसर पर कोटा शाखा कार्यकारिणी के सुरेश गोयनी, दिलीप पुरसवानी, कृष्ण सुन्दर नागा, श्याम शर्मा, राजेन्द्र शर्मा, दीपक खुबचंदानी, राजु नागा, तपोधन दाधीच व मुकेश कुमार आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

योग से होता है सकारात्मक ऊर्जा का संचार - पार्थ

बाबा गंगाईनाथ का बरसी पर्व मनाया

नाथद्वारा/जोधपुर।

चौपासनी होटल तीरिया के पास स्थित आध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र में गुरूदेव रामलाल सियाग के गुरूदेव बाबा गंगाईनाथ का बरसी पर्व श्रद्धा से मनाया गया। योगी गोरखनाथ ने नाथ पंथ को 12 भागों में बांटा था। जिसमें एक पंथ है आईपंथ। बाबा गंगाईनाथ आईपंथी के नाथ थे और मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए अमर ज्ञान को पृथ्वी पर प्रकट कर, सद्गुरूदेव रामलाल सियाग को मनुष्य मात्र में बांटने के लिए शक्तिपात दीक्षा की सामर्थ्य प्रदान किया था। संस्था अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार चौधरी व अन्य ट्रस्टी सदस्यों ने दीप प्रज्वलित कर बाबा गंगाईनाथ योगी के चित्र की पूजा की। पूजा अर्चना के बाद गुरूदेव रामलाल सियाग के सिद्धयोग दर्शन पर आधारित दिव्य वाणी में रिकॉर्डेड प्रवचन वीडियो सुनाया गया। प्रवचन के बाद आए सैकड़ों साधकों द्वारा संजीवनी मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान किया गया। सुदूर देशों में बैठे लोग गुरूदेव सियाग की मंत्र वाणी सुनकर और उनकी फोटो देखकर ध्यान कर रहे हैं और ध्यान लगा रहे है।

जैसलमेर सेक्टर में तेल खोज कार्य के दौरान मिले चार एटी टैंक माइंस

जननायक

बाबा गंगाईनाथ महायोगी का बरसी महोत्सव कल

कार्यालय संवाददाता

कोटा, 20 दिसम्बर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा के तत्वावधान मे ब्रह्मलीन बाबा गंगाईनाथ महायोगी का 36वाँ बरसी महोत्सव 22 दिसम्बर को प्रातः 11 बजे माइल स्टोन रेजीडेन्सी कोटा के पास केनाल रोड सीन्ता स्थित आश्रम मे मनाया जायेगा।

कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौत्तम ने बताया कि बाबा गंगाईनाथ महायोगी नाथ सम्प्रदाय के बारह पंथो मे से एक पंथ, आईपंथी नाथ थे। जिन्होने भारतीय वैदिक दर्शन को विश्व दर्शन बनाने के लिये कुण्डलिनी महाविज्ञान के ज्ञाता सद्गुरूदेव संत रामलाल सियाग को रहस्यमय तरीके से समाधि लेने के दो दिन बाद अपनी अहेतुकी कृपा से अपनी समस्त आध्यात्मिक शक्तियों सहित गुरूपद सौंप दिया था। इस अवसर पर कोटा, बूंदी, बारां तथा झालावाड आदि स्थानों से आए साधक सामूहिक रूप से ध्यान करेगें तथा गुरू-शिष्य परम्परा के अनुसार पूजा अर्चना एवं सामूहिक मंत्रजप का कार्यक्रम भी होगा तथा इसके साथ ही नवआगन्तुक एवं जिज्ञासु लोगों को शक्तिपात दीक्षा भी दी जायेगी।

बाबा श्री गंगाईनाथ जी बरसी पर्व समाचारों की सुर्खियों में

गंगाईनाथ जी महायोगी का 36वाँ बरसी महोत्सव

कोटा। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा के तत्वावधान में ब्रम्हलीन बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी का 36वाँ बरसी महोत्सव दिनांक 22 दिसम्बर रविवार को प्रातः 11:00 बजे माइल स्टोन रेजीडेन्सी कोटा के पास केनाल रोड सीन्ता स्थित आश्रम में श्रद्धापूर्वक मनाया जायेगा। कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि ब्रम्हलीन बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी नाथ सम्प्रदाय के बारह पंथों में से एक पंथ आईपंथी नाथ थे जिन्होंने भारतीय वैदिक दर्शन को विश्व दर्शन बनाने के लिये कुण्डलिनी महाविज्ञान के ज्ञाता सद्गुरूदेव संत श्री रामलाल जी सियाग को कुण्डलिनी महाविज्ञान के माध्यम से विश्व के प्रत्येक मनुष्य की कुण्डलिनी जागृत कर स्वतः स्फूर्त योग द्वारा मानवता की समस्त समस्याओं का निदान कर विश्व में शान्ति स्थापना की समर्थता प्राप्त हो गई तथा समर्थ सद्गुरूदेव संत श्री रामलाल जी सियाग ने घोषणा की कि मैं मानव मात्र को योग का प्रसाद बाटने ही संसार में निकला हूँ, यह सिद्धयोग दर्शन अन्य दर्शन अन्य दर्शनों की तरह खण्डन मण्डन नही करता, यह तो मनुष्य शरीर की रचना की सच्चाई पर आधारित दिव्य ज्ञान है, यह तो मानव मात्र की सम्पूर्ण योग्ये में मूल होने की किंकल्पक विधि बताकर सीध ही प्रदान नही करता अपितु विश्व में शान्ति भी स्थापित करता है।

इस अवसर पर कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ सहित सम्पूर्ण हाड़ौती संभाग से आए हुए हजारों साधक सामूहिक रूप से ध्यान करेंगे तथा गुरू-शिष्य परम्परा के अनुसार पूजा अर्चना एवं सामूहिक मंत्रजप का कार्यक्रम भी होगा तथा इसके साथ ही नवआगन्तुक एवं जिज्ञासु लोगों को शक्तिपात दीक्षा भी दी जायेगी। इसी प्रकार देश-विदेश एवं जोधपुर मुख्यालय स्थित आश्रम मे भी बरसी महोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया जायेगा, वहाँ पर पूजा-अर्चना संस्था के अध्यक्ष राजेन्द्र सियाग करेंगे।

संत गंगाईनाथ की 36वीं बरसी कल

कोटा, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र कोटा इकाई में ब्रह्मलीन बाबा गंगाईनाथ का 36वां बरसी महोत्सव 22 दिसम्बर रविवार सुबह 11:00 बजे माइल स्टोन रेजीडेन्सी कोटा के पास सीन्ता स्थित आश्रम में श्रद्धापूर्वक मनाया जाएगा।

केंद्र के प्रवक्ता राजेश गौत्तम ने बताया कि ब्रह्मलीन बाबा गंगाईनाथ महायोगी नाथ सम्प्रदाय के 12 पंथों में से एक पंथ आईपंथी नाथ थे। इन्होंने भारतीय वैदिक दर्शन को विश्व दर्शन बनाने के लिए कुण्डलिनी महाविज्ञान के ज्ञाता सद्गुरूदेव रामलाल सियाग को रहस्यमय तरीके से 30 दिसंबर 1983 को समाधि लेने के दो दिन बाद कृपा से अपनी समस्त आध्यात्मिक शक्तियां गुरुपद सौंप दी।

गंगाईनाथ महायोगी की बरसी महोत्सव संपन्न

कोटा। (मीनेश जोशी)। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा की ओर से ब्रम्हलीन बाबा गंगाईनाथ महायोगी की बरसी महोत्सव रविवार को सुबह 11:00 बजे माइल स्टोन रेजीडेन्सी कोटा केनाल रोड सीन्ता स्थित आश्रम में पूर्वक मनाया गया। कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारंभ में बाबा गंगाईनाथ महायोगी की तस्वीर की पूजा अर्चना कर माल्यार्पण किया गया इसके पश्चात बसमर्थ सद्गुरूदेव संत श्री रामलाल जी सियाग की चरण पादुकाओं का प्रक्षालन कर उनके सैकडो शिष्यों की उपस्थिति मे कोषाध्यक्ष राजेश गौतम, हरकचन्द शर्मा एवं राकेश खण्डेलवाल द्वारा पूजा-अर्चना एवं आरती की गई।

आरती के पश्चात् उपस्थित श्रद्धालुओं ने गुरू-शिष्य परम्परा के अनुसार प्राप्त गंगाईनाथ मंत्र के जाप के साथ सामूहिक ध्यान किया। ध्यान के दौरान साधकों को ऑटोमेटिक यौगिक मूवमेन्ट होने लगे। भारतीय वैदिक दर्शन से सिद्धयोग की ओर से स्वतः यौगिक मूवमेन्ट होना विज्ञान के लिये आश्चर्यजनक है और विश्वभर के लोग आश्चर्यचकित है। इस [illegible] इंजीनियर साधक खुशहाल बाबा ने किया। इन्होंने मंत्रजाप एवं ध्यान की विधि बताई। ध्यान के पश्चात बाबा गंगाईनाथ को पुष्पहार आदि भेंट कर चरण वन्दना की। इस अवसर पर कोटा शाखा कार्यकारिणी के सुरेश जी योगी, दिलीप पुरसवानी, श्याम शर्मा, गजेन्द्र शर्मा, दीपक खूबचंदानी, राजू नागा, तपीपन दाधीच मौजूद थे।

महायोगी की बरसी मनाई

कोटा 22 दिसम्बर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा द्वारा ब्रम्हलीन बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी का 36वाँ बरसी महोत्सव दिनांक 22 दिसम्बर रविवार को प्रातः 11:00 बजे माइल स्टोन रेजीडेन्सी कोटा केनाल रोड सीन्ता स्थित आश्रम मे मनाया गया। कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौत्तम ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारम्भ मे बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी की तस्वीर की पूजा अर्चना कर माल्यार्पण किया गया इसके पश्चात बाबा श्री गंगाईनाथ जी के लिए एवं समर्थ सद्गुरुदेव संत श्री रामलाल जी सियाग की चरण पादुकाओं का प्रक्षालन कर उनके सैंकडो शिष्यों की उपस्थिति मे कोषाध्यक्ष राजेश गौतम, हरकचन्द शर्मा एवं राकेश खण्डेलवाल द्वारा पूजा-अर्चना एवं आरती की गई। कोटा शाखा कार्यकारिणी के सुरेश जी योगी, दिलीप पुरसवानी, श्याम शर्मा, गजेन्द्र शर्मा, दीपक खूबचंदानी, [illegible]

पूजा-अर्चना कर, सामूहिक ध्यान लगाया

बाबा गंगाईनाथ महायोगी का बरसी महोत्सव मनाया

कार्यालय संवाददाता

कोटा, 22 दिसम्बर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा की ओर से ब्रह्मलीन बाबा गंगाईनाथ महायोगी का 36वां बरसी महोत्सव रविवार को सुबह 11 बजे केनाल रोड सीन्ता स्थित आश्रम में मनाया गया।

कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारम्भ में बाबा महायोगी की तस्वीर की पूजा-अर्चना कर माल्यार्पण किया गया। इसके बाद बाबा के लिए एवं समर्थ सद्गुरुदेव संत रामलाल सियाग की चरण पादुकाओं का प्रक्षालन कर पूजा-अर्चना एवं आरती की गई।

आरती के बाद उपस्थित श्रद्धालुओं ने गुरु-शिष्य परम्परा के अनुसार प्राप्त गंगाईनाथ मंत्र के जाप के साथ सामूहिक ध्यान किया। ध्यान के दौरान साधकों को ऑटोमेटिक यौगिक मूवमेन्ट होने लगे। इस सम्बन्ध में संत सियाग का कहना है कि यह मानवीय चेतनाओं का अष्टम योग है एवं भारतीय वेदों में वर्णित वेदरूपी कल्पतरु का अमर फल है जो मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

कार्यक्रम का संचालन इंजीनियर साधक खुशहाल बाबा ने किया। इन्होंने मंत्रजाप एवं ध्यान की विधि बताई। ध्यान के पश्चात बाबा महायोगी को पुष्पहार आदि भेंट कर चरण वन्दना की। इस अवसर पर कोटा शाखा कार्यकारिणी के सुरेश जी योगी, दिलीप पुरसवानी, श्याम शर्मा, गजेन्द्र शर्मा, दीपक खूबचंदानी आदि भी मौजूद थे।

बरसी महोत्सव में मौजूद लोग।

फूलमालाए पहनाकर व पुष्प वर्षा सेन,आदि अन्य भाजपा कार्यकर्ता थे।

दैनिक भारकर

23-Dec-2019
कोटा जिला आसपास P:

गंगाईनाथ महायोगी की बरसी पर ध्यान किया

तपोभूमि। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा द्वारा गंगाईनाथ महायोगी का 36वां बरसी महोत्सव रविवार को कोटा के सीन्ता स्थित आश्रम में मनाया गया। इसमें श्रद्धालुओं ने भी शामिल पहुंचे।

कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि बाबा की तस्वीर की पूजा अर्चना कर माल्यार्पण किया गया इसके बाद बाबा रामलाल सियाग की चरण पादुकाओं का प्रक्षालन किया। कोषाध्यक्ष राजेश गौतम, हरकचन्द शर्मा एवं राकेश खण्डेलवाल द्वारा पूजा-अर्चना एवं आरती की गई। संचालन इंजीनियर साधक खुशहाल बाबा ने किया। इन्होंने उपस्थित श्रद्धालुओं को मंत्रजाप एवं ध्यान की विधि बताई। कोटा शाखा कार्यकारिणी के सुरेश जी योगी, दिलीप पुरसवानी, राजू नागा, तपीपन दाधीच मौजूद थे।

रामलालजी, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र के आयोजन में पूजा करते हुए।

ब्रह्मलीन बाबा गंगाई नाथ महाराज का 36 वां बरसी महोत्सव आज

कोटा, 21 दिसंबर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर शाखा कोटा के तत्वावधान में ब्रह्मलीन बाबा श्री गंगाई नाथ महाराज का 36 वा बरसी महोत्सव 22 दिसबर रविवार को प्रातः 11 बजे कैनाल रोड सीन्ता स्थित आश्रम मे श्रद्धा पूर्वक मनाया जावेगा।

कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष एवं प्रेस प्रभारी राजेश गौतम ने बताया कि ब्रह्मलीन बाबा श्री गंगाई नाथ महाराज महायोगी नाथ संप्रदाय के बारह पन्थों में से एक पंथ आई पंथी नाथ थे, जिन्होंने भारतीय वैदिक दर्शन को विश्व दर्शन बनाने के लिए कुंडलिनी महाविज्ञान के ज्ञाता सदगुरुदेव रामलाल सियाग को रहस्यमय तरीके से 30 दिसबर 1983 को समाधि लेने के दो दिन पश्चात अपनी अहेतुकी कृपा से अपनी समस्त आध्यात्मिक शक्तियों सहित गुरुपद सौंप दिया था। इसके पश्चात ही समर्थ सदगुरुदेव रामलाल सियाग को कुंडलिनी महाविज्ञान के माध्यम से विश्व के प्रत्येक मनुष्य को कुडलिनी जागृत कर स्वतः सफूर्त योग द्वारा मानवता योग द्वारा मानवता की समस्त समस्याओं का निदान कर विश्व में शांति स्थापना की समर्थता प्राप्त हो गई तथा समर्थ सद्गुरुदेव सत रामलाल सियाग ने घोषणा की कि मैं मानव मात्र को योग का प्रसाद बाटने ही संसार में निकला हू। यह सिद्धयोग दर्शन अन्य दर्शकों की तरह खंडन मडन नही करतायह तो मनुष्य शरीर की रचना की सच्चाई पर आधारित दिव्य ज्ञान है।

उन्होने बताया कि इस अवसर पर कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ सहित संपूर्ण हाडौती संभाग से आए हुए हजारो साधक सामूहिक रुप से ध्यान करेंगे तथा गुरु शिष्य परंपरा के अनुसार पूजा-अर्चना एवं सामूहिक मंत्र जप का कार्यक्रम होगा तथा इसके साथ ही नवआगतुक एव जिज्ञासु लोगों को शक्तिपात शिक्षा भी दी जाएगी।

NEWS BYTES

बाबा गंगाईनाथ का बरसी महोत्सव कल

संदेश न्यूज। कोटा. अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर की शाखा कोटा के तत्वावधान में बाबा गंगाईनाथ महायोगी का 36वां बरसी महोत्सव रविवार को सुबह 11 बजे माइल स्टोन रेजीडेन्सी कोटा के पास केनाल रोड सीन्ता स्थित आश्रम में श्रद्धापूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर सम्पूर्ण हाड़ौती संभाग से आए हुए साधक सामूहिक रूप से ध्यान करेंगे तथा गुरू-शिष्य परम्परा के अनुसार पूजा अर्चना एवं सामूहिक मंत्रजाप का कार्यक्रम भी होगा तथा इसके साथ ही नवआगन्तुक एवं जिज्ञासु लोगों को शक्तिपात दीक्षा भी दी जाएगी। कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौत्तम ने बताया कि बाबा गंगाईनाथ महायोगी नाथ सम्प्रदाय के बारह पंथो में से एक पंथ आईपंथी नाथ थे, जिन्होंने भारतीय वैदिक दर्शन को विश्व दर्शन बनाने के लिए कुण्डलिनी महाविज्ञान के ज्ञाता संत रामलाल सियाग को समाधि लेने के दो दिन बाद अपनी अहैतुकी कृपा से अपनी समस्त आध्यात्मिक शक्तियों सहित गुरुपद सौंप दिया था।

बरसी महोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया

कोटा (सीमा सन्देश सं.)। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा द्वारा ब्रह्मलीन बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी का 36वाँ बरसी महोत्सव रविवार को माइल स्टोन रेजीडेन्सी कोटा केनाल रोड सीन्ता स्थित आश्रम मे श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौत्तम ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारम्भ मे बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी की तस्वीर की पूजा अर्चना कर माल्यार्पण किया गया इसके पश्चात् बसमर्थ सद्गुरूदेव संत श्री रामलाल जी सियाग की चरण पादुकाओं का प्रक्षालन कर उनके सैंकडो शिष्यों की उपस्थिति मे हरकचन्द शर्मा एवं राकेश खण्डेलवाल द्वारा पूजा-अर्चना एवं आरती की गई।।कार्यक्रम का संचालन इंजीनियर साधक खुशहाल बाबा ने किया। इन्होंने

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

Mon 4 JAN 1988

Vikrami—20 Poush 2044 Saka—14 Poush 1909
Samvat—15 Poush Sudi 2044 Hijri—3 Jamadi-ul 1408

सोमवार ४ जनवरी पौष सु. १५ वि. २० पौष सं. २०४४

भारत का भाग्योदय होने ही वाला है। हानि क्या है अवसर से चूकना

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय में अर्जुन को युग युग में स्वयं प्रकट होने का स्पष्ट संकेत किया है। संसार में जब धर्म का लोप हो जाता है तब भगवान दुष्टों का विनाश करने और संत लोगों का कल्याण करके पुनः संसार में धर्म स्थापित करने के लिए युग युग में अवतार लेते हैं। पैगम्बर यानि संत लोग संसार में प्रकट होकर अपनी आध्यात्मिक शक्ति और त्याग के द्वारा सात्विक चेतना फैलाने का कार्य करते हैं। संतों के उपदेशों से जब काम चलना बन्द हो जाता है और संसार में पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का साम्राज्य स्थापित हो जाता है, ऐसी स्थिति में भगवान अवतार लेते हैं। संसार भर से पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का सफाया करके और सात्विक शक्तियों का एक छत्र साम्राज्य स्थापित करके स्वयं अपने धाम को पधार जाते हैं। संसार में पूर्ण शान्ति और सात्विक शक्तियों का साम्राज्य भगवान के अवतार के बिना सम्भव नहीं है। स्वयं अवतार लेने से पहले कुछ ऐसे संतों को भेजते हैं जो भगवान के अवतार के सम्बन्ध में भविष्य वाणियां करते हैं। ठीक इसी प्रकार की भविष्य वाणियां संसार भर के विभिन्न धर्मों के संत काफी समय से करने लगे हैं। मोटे तौर पर सभी एक ही बात कहते हैं कि वह शक्ति भारत के उत्तरी भाग से प्रकट होकर अपने क्रमिक विकास के साथ इस सदी के अन्त तक पूरे संसार को अपनी तरफ आकर्षित कर लेगी। संसार भर के सभी धर्मों के लोग उसकी तरफ इतने आकर्षित होंगे कि सब का ध्यान उस शक्ति पर केन्द्रित हो जायगा। सारे संसार के लोग उसके आदेशों का पालन करने लगेंगे। इस प्रकार 21वीं सदी में संसार भर में उस शक्ति के प्रभाव से सात्विक शक्तियों का साम्राज्य स्थापित हो जायगा और भारत पुनः अपने जगद्गुरु के पद पर आसीन होकर मानव मात्र (जीवमात्र) के कल्याण हेतु कार्य प्रारम्भ कर देगा।

Om Lal
04/02/1988

Beginning of my Spiritual Life

-Gurudev Shri Ramlal ji Siyag

When I talk about 'Naamkhumari' (Intoxication due to chanting) and 'Naam-amal', they are not able to believe it. Our sages have talked about direct experience and self realisation and this was repeated before the world by Swami Vivekanand in the last century. The great saint Sant Guru Nanakdeo ji and Kabir Saheb have clearly revealed about **'Naamkhumari'** and **'Naamamal'**. Due to the monopoly of the 'Tamasic' powers, the people of this era are not able to understand it. The mankind of this era cannot be blamed for this, it is the quality of this era.

If the condition of the world would not have been such, the descent of the supreme power wouldn't have been possible. When I talk about causal body, subtle body, soul and that it is possible to have direct experience and self realisation, people of the world look at me with disbelief.

This way I see that if I start talking about 'lokas' existing beyond the field of 'Maya' like 'Satlok', 'Alakhlok' and 'Agamlok', people of this era will revolt against me. When it looks impossible for the man of this era to have knowledge of the experiences that can be had while living in the field of 'Maya' then talks about the 'lokas' beyond the field of 'Maya' will be considered totally imaginary and untrue. I have been knowing and experiencing the different 'Lokas' of the spiritual world for quite some time now.

All such experiences are being found true in physical world too. But I was not in a state where I could help others in experiencing this. After the passing away of Gurudev, when people related to me started experiencing this, I was very surprised. Since, from the beginning, I was totally unaware of the philosophical aspect of the Hindu religion, I was not able to understand it.

After meeting several people from Philosophical field, I came to know that when a true spiritual saint reaches the last stage of his life, due to having received the divine vision, he can see the past, present and future. So, this way he has complete knowledge of the person to whom he has to transfer all of his spiritual powers by 'Shaktipat' initiation. So, this way by the strength of his Spiritual power, he calls that person to him and gets his surrender and at the time of surrender, based on the principles of **'Shaktipat'**, transfers all his powers to him.

But till the time that saint is physically present in the world, all the powers work under him. The moment that saint dies, all the powers enter into the person on whom the **'Shaktipat'** was done by the saint. When miracles start happening through that person due to those powers, he gradually starts understanding the situation.

❖❖❖

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे:- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- **आधिदैहिक, आधिभौतिक व आधिदैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (**नाश**) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसे:-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसे:-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसे:- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याददाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

चेतना को धरती और मानव कल्याण के लिये नीचे उतार लाने में सफल भी हो गये पर **अधोलोकों** में बसा पाना लोगों की ग्रहणशीलता, स्वीकारोक्ति और **अभीप्सा** पर निर्भर करता है। **यह भागवत प्रेम धरती की चेतना में तभी ठहर सकता है, जब मनुष्य के भीतर की निम्न से निम्न चेतना भी उसे ग्रहण करना चाहेगी।**

यही **सबसे दुष्कर** कार्य है। हमारी अदिव्यतायें और विकृतियों का जीवन भगवान् के दिव्य प्रेम को स्वीकार नहीं करता। अंधकार, प्रकाश को ग्रहण नहीं करना चाहता। मृत्यु, अमरता के सोम को घूंटने से इंकार करती है, यही मनुष्य की वर्तमान समस्या है फिर भी चूँकि **दिव्य शिखर** में भगवान् का निर्णय मानव जाति के उद्धार का हो चुका है और पृथ्वी को **दिव्यता** का अनुपम वरदान मिल चुका है, इसलिये रूपान्तर का कार्य ग्रहणशीलता के अनुपात में शुरू हो चुका है और **चाहे इस कार्य में समय लग जाय पर भागवत इच्छा निष्फल नहीं होगी।**

प्रेम की इस **दिव्य धारा** को जीवन के विभिन्न प्रदेशों के साथ जोड़ने के लिये भगवती माता ने मानव शरीर धारण कर मनुष्यों के भीतर **चैतन्य शक्ति** को ग्रहण करने के लिये चैत्य पुरुष को हृदयों में जाग्रत और विकसित किया है, यह चैत्य पुरुष **अतिमानस शक्ति** का मनुष्य के भीतरी एक छोटा सा ट्रांसफार्मर है जो ऊपर से अवतरित होने वाले **दिव्य प्रेम** को ग्रहण करता है और फिर स्नायु मण्डल के विभिन्न तारों और कोशिकाओं के माध्यम से सत्ता के अँधेरे पक्षों में भगवान् के प्रेम व प्रकाश को संचरित करता है। यह चैत्य पुरुष ही दिव्य जीवन की **कुँजी** है, जो इस युग में मानव जाति को प्रारब्ध के रूप में मिली है और जिसके लिये देवता तरसते हैं।

चैत्य पुरुष शक्ति, प्रेम व भागवत प्रकाश को धारण करते हुए क्रम से मन, प्राण और शरीर से बने **त्रिगुणात्मक जीवन** को सबसे पहले रूपान्तरित करने का प्रयास करता है इसके लिये बार-बार के Descent **(अवतरण)** की आवश्यकता होती है क्योंकि हमारी वासनायें और विकृतियाँ इस अमरता के अमृत का जमकर दुरुपयोग करती हैं और उसे अपनी कूड़ेदानी में बार-बार फेंक देती हैं फिर भी किंचित प्रभाव भी धीरे-धीरे उनकी प्रकृति में परिवर्तन ला देता है। ज्यों ज्यों मंदिर साफ होता जाता है अवतरण नीचे को धँसता जाता हैं।

रूपांतर का कार्य वर्ष दो वर्ष का काम नहीं है। इसमें वर्षों यहाँ तक कि सारा जीवन ही लग जाता है, यह अवतरण त्रिगुणात्मक जीवन की तलहटी में जब पहुँचता है तो रूपांतर की क्रिया एक युद्ध भूमि में परिणित हो जाती है। हमारी अवचेतना और निश्चेतना के प्रदेश असत्, अंधकार, पीड़ा, झूठ, अन्याय, विनाश और मृत्यु के गढ़ हैं जिनका प्रतिनिधित्व अंधकार की प्राणलेवा शक्तियाँ करती हैं। इन्हें ही असुर, दैत्य या वेदों में पणि, बल, वृत्र और यम कहा गया है। ये शक्तियाँ पग-पग पर अवतरण को रोकने के लिये युद्ध करती हैं। तब हमारा जीवन कुरुक्षेत्र बन जाता है। इस युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिये साधक को अर्जुन का गाण्डीव धारण करना पड़ता है और चैत्य-कृष्ण को अपने रथ का सारथी बनाना पड़ता है।

निश्चेतना का यह दुर्गम गढ़ श्री अरविन्द और श्री माँ के अनुसार नर्क की पेंदी में छिपा हुआ एक अमूल्य खजाना भी है। ये विरोधी **दानवी शक्तियाँ** वास्तव में इस खजाने की पहरेदार हैं और इसकी रक्षा करने के लिये ही ये जीवन के **ऊर्ध्वलोकों** तक हमला करती हैं। **अदिव्यता** के घर में **परम दिव्यता** का खजाना-यह खोज आध्यात्मिक जीवन की सबसे बड़ी खोज है जिसे श्री अरविन्द और श्री माँ ने पूरा किया।

श्री अरविन्द कहते हैं-

The Inconscient is the superconscient's sleep

Darkness a magic of hidden light. (A Voice) Entered the invisible and forbidden house.... Where by the miser traffickers of sense

unused guarded beneath Nights' dragon Paws

...Who priceless value could have saved the World.

अर्थात् "निश्चेतना का जगत् अति चेतना की ही **सुषुप्त अवस्था** है और अंधकार छिपाये गये

www.the-comforter.org

परमप्रकाश का जादू है..... खोजी स्पन्दन की वाणी ने एक **अदृश्य** और वर्जित घर में प्रवेश किया, जहाँ उसे महान् दिवस का खजाना मिल गया और जिसे वासना के कंजूस पणिक खर्च न कर महारात्रि के विकराल पंजे के नीचे दबाये पहरा दे रहे थे। यदि यह खजाना छिपा न होता तो इस अमूल्य निधि (**सत्य के प्रकाश**) से संसार को ज्ञान की गरीबी से बचा लिया गया होता।

निश्चेतना का यह साम्राज्य False matter का राज्य है Matter अपने मूल में विशुद्ध चैतन्य अर्थात् अतिमानस ही है लेकिन इसे भौतिक मन ने अज्ञान के तमस का चश्मा लगाकर अशुद्ध (false) बना डाला। यह भौतिक मन, कीचड़ जैसी दीवाल या चश्मा है जिसके माध्यम से देखने पर सारा कुछ जो सुन्दर था, वह असुन्दर में बदल गया। यही हमारे जीवन की सबसे जटिल और मायावी समस्या है, इसके कारण ही चेतना की गहराई में सारी अच्छाइयाँ बुराइयों में, सारा देवत्व असुरत्व में बदल गया।

जीवन मृत्यु में बदल गया। यदि इस **दीवाल को किसी प्रकार पार कर लिया जाय तो जीवन और मृत्यु में कोई अंतर नहीं रह जाता।** सारा भ्रम दूर हो जाता है। मृत्यु का स्थान **अमरत्व** और **असत्** का स्थान सत् ले लेता है। सत्ता के बैं मे Material Supermindfey जाता है और शिखर की Spirit पेंदी के Matter से मिल जाती है।

इसलिये सारी समस्या है, इस भौतिक मन **(Physical Mind)** की दीवाल को ढहाने की अर्थात् मन के बुने इस **काले जाल या चश्मे** को हटाने की। **प्रकृति स्वयं इस दैवनिर्दिष्ट कार्य को धीरे-धीरे अपने ढंग से कर रही है और सारा विकास इसी दिशा की ओर जा रहा है,** पर प्रकृति को इस कार्य में लाखों करोड़ों वर्ष लग सकते हैं। Descent की शक्ति द्वारा इसे कुछ ही वर्षों में पूरा किया जा सकता है।

भगवान् की कृपा ने विकास की प्रक्रिया को तीव्र करने के लिये ही हस्तक्षेप किया है। Descent इसी कृपापूर्ण हस्तक्षेप का परिणाम है इस **परमशक्ति** को धारण करके योद्धा साधक भगवान् के इस कार्य को पूरा करने के लिये युद्ध के मैदान में कूदते हैं और भौतिक मन के अँधेरे जगत् में धावा बोलते हैं। **यहीं यह योग कठिन युद्ध बन जाता है जिसे हर कोई नहीं लड़ सकता।** शक्ति योद्धा साधकों का चुनाव करके अपने रणबाँकुरों को ही इस संघर्ष में झोंकती है और स्वयं ही सेनापति बनकर **Descent** के रूप में अपने वज्र से कीचड़ की कठोर दीवाल को गिराने का अभियान शुरू करती है। विरोधी शक्तियाँ भौतिक मन की ही **कौरवी शक्तियाँ** है, जो जानवरों व मनुष्यों को ही अपना **यंत्र** बनाती हैं।

ये सत्तायें वैसी मानवेतर नहीं होती जैसा काल्पनिक चित्रों में विकराल रूप देकर दिखाया जाता है। निश्चेतन में साधना के पहुँचते ही अर्थात् Descent के वज्र की गहराई में आते ही जानवर, आदमी, पड़ोसी सभी चीजें आक्रामक हो जाती हैं। **सारी कठिनाइयाँ एक साथ टूट पड़ती हैं।** माता जी कहती है कि यही श्रीअरविन्द और उनके साथ घटा है। पर बिना इस युद्ध को लड़े और विरोधों पर विजय पाये रूपान्तर पूर्ण नहीं हो सकता।

तमस को तोड़ने के लिये Descent का प्रयोग **सब्बल** के रूप में करना पड़ता है और लड़ाई चाहे जितनी लम्बी चले, इस तमस को तोड़ना अवश्यंभावी है। श्रीमां के अनुसार यह भगवान् की इच्छा है और उसे पूरा करने का यही समय है। श्रीमां और श्रीअरविन्द दोनों ने इस युद्ध में अपनी बलि दी है और तमस में छेद हो चुका हैं। **मानव जाति के रणबाँकुरों को उन्होंने बाकी के कार्य को पूरा करने में सहयोग के लिये आह्वान किया है।** लोगों को इस यज्ञ में भाग लेने से कतराना नहीं चाहिए, क्योंकि इस संघर्ष में जितना कष्ट है उससे सहस्र गुना कृपा और क्षण-क्षण में शक्ति का अकल्पनीय प्यार व भगवान् की सतत् उपस्थिति, योद्धा साधक को धन्य कर देती है।''

-श्री अरविन्द साहित्य से

लड़ाई भीतर की है, हमें अंतर के अंधकार को मिटाने के लिए अपनी आराधना को मजबूत करना होगा, तभी हम इस लड़ाई को, विश्व युद्ध को जीतने में सक्षम हो पाएंगे। गुरुदेव सियाग सिद्धयोग में सघन मंत्र जप और नियमित ध्यान ही इस अघोषित युद्ध को जीतने व दिव्य रूपान्तरण के मुख्य साधन हैं।

-सम्पादक

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

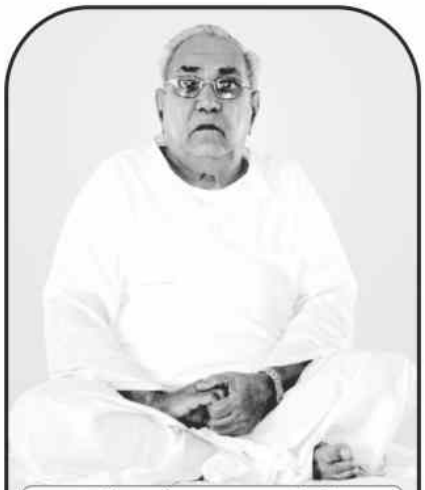

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

ध्यान करके देखें।

ध्यान की विधि

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

Method of Meditation

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

www.the-comforter.org

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र** , जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

Web : www.the-comforter.org | E-mail : avsk@the-comforter.org

रा.उ.मा. विद्यालय ठीकरवास कलां ब्लॉक भीम (राजसमंद) में आयोजित आत्म रक्षा प्रतिक्षण शिविर में सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। (23 दिसम्बर 2019)

स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूल भीम (राजसमंद) में सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। (23 दिसम्बर 2019)

गुजरात के बनासकांठा जिले के डीसा क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (25 से 27 दिसम्बर 2019)

AVSK कोटा द्वारा वर्धमान कोटा खुला विश्वविद्यालय के योग साइंस डिप्लोमा विभाग के विद्यार्थियों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। (27 दिसम्बर 2019)

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा कोटा में बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) के बरसी पर्व पर पूजा अर्चना कर सैकड़ों साधकों ने ध्यान किया। (22 दिसम्बर 2019)

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी

पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् _____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी